जनसंख्या को भरण–पोषण प्राप्त होता है, उसकी मात्रा निश्चित है।

(iii) वितरण संकेन्द्रित : पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण सर्वत्र एक समान नहीं है। केवल थोड़े से ही भाग ऐसे हैं जिनमें जनसंख्या संकेन्द्रित है। पृथ्वी के केवल 1/3 थलखण्ड पर संसार की 90 प्रतिशत जनंसख्या निवास करती है। अतः जनसंख्या में वृद्धि होने से जनसंख्या का भार पृथ्वी पर अधिकाधिक बढ़ता चला जा रहा है। चीन, जापान, कोरिया, भारत, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, आदि में जनता का जीवन–स्तर बहुत नीचा है।

(iv) बिना बसे भू–भागों में निराशा : पृथ्वी के बिना बसे हुए भू–भागों का क्षेत्रफल पृथ्वी के समस्त क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत है। इससे भविष्य में भी मानव निवास होने या बढ़ने की आशा नहीं है।

(v) प्राकृतिक और मानवीय प्रतिबन्ध : जब किसी प्रदेश की जनसंख्या का भार वहाँ के भौतिक संसाधन धारण नहीं कर सकते हैं, तो उस प्रदेश में भुखमरी फैल जाती है। दरिद्रता के कारण रहन–सहन का स्तर इतना नीचा गिर जाता है कि बीमारी और महामारी से मृत्यु–दर बढ़ जाती है और जनसंख्या का ह्रास होने लगता हैं

जनसंख्या समस्या समाधान

(i) भौगोलिक संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग करके आर्थिक उत्पादन में वृद्धि करना।

(ii) औद्योगीकरण, परिवहन, संचार–साधनों, खनन– उद्योगों और निर्माण–उद्योगों की उन्नति, यंत्रीकरण, कोयला, पेट्रोल–बिजली के अधिकतम उत्पादन पर नियन्त्रण आवश्यक।

(iii) शिक्षा का प्रसार और विज्ञान एवं तकनीकी प्रशिक्षण के अधिक से अधिक प्रसार से जागरूकता लाना।

(iv) कृषि का नवीनीकरण

(v) सागरीय संसाधनों का उपयोग

(vi) जनसंख्या का अल्प बसे क्षेत्रों में प्रवास

(ix) देरी से विवाह, परिवार नियोजन और सन्तति निग्रह।

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का उपयोग किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या के वर्णन एवं भावी जनसंख्या के पूर्वानुमान के लिये किया जाता है। जनसंख्या परिवर्तन का यह सिद्धान्त हमें बताता है कि जैसे ही किसी समाज, ग्रामीण, खेतिहर और अशिक्षित अवस्था से उन्नति करते हुए साक्षर, नगरीय और औद्योगिक अवस्था की और बढ़ता है तो किसी प्रदेश की जनसंख्या उच्च जन्मदर और उच्च मृत्यु दर से निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर में परिवर्तित होने लगती है। जनसंख्या में होने वाला यह परिवर्तन विभिन्न अवस्थाओं में होता है, जिसे सामूहिक रूप से जनांकिकीय चक्र के रूप में पहचाना जाता है। उदाहरण के लिये इसे रेखाचित्र में समझाया गया है।

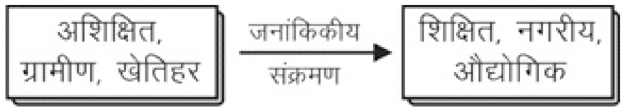

संसार में जनसंख्या की वृद्धि के इतिहास पर अध्ययन करने से हमें जनसंख्या के वृद्धि की विभिन्न अवस्थाएँ देखने को मिलती है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी जनसंख्या रिपोर्ट्स में भी जनसंख्या वृद्धि की विभिन्न अवस्थाओं पर अपने विचार प्रकट किये हैं। यह सम्पूर्ण परिवर्तन पाँच अवस्थाओं से गुजरता है।

(i) उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर

(ii) उच्च जन्म दर, मृत्यु दर, उच्च परन्तु गिरती हुई।

(iii) उच्च जन्म दर, मध्यम मृत्यु दर

(iv) मध्यम जन्म दर, निम्न मृत्यु दर

(v) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त की इन अवस्थाओं पर विश्व के कई प्रसिद्ध विश्लेषकों– ब्लेकर, साइमन, बर्गडोरफ़र ने भी अपने विचार प्रकट किये हैं। इस सिद्धान्त की इन पाँचों अवस्थाओं को निम्न रेखाचित्र 3.2 में समझाया गया है।

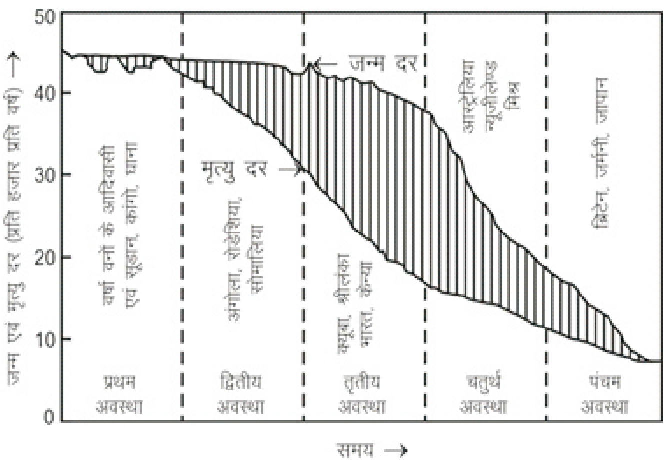

रेखाचित्र 3.2 : जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त

उपरोक्त रेखाचित्र की पाँचों अवस्थाओं को विश्व स्तर पर इस प्रकार समझ सकते हैं।

(i) प्रथम अवस्था में जन्म एवं मृत्यु दर दोनों ही उच्च स्तर पर होते हैं। इसलिये इन देशों या क्षेत्रों में जनसंख्या की वृद्धि बहुत मन्द होती है। विश्व में इस अवस्था के अधिकतर देश जीवन निर्वाह कृषि पर निर्भर है अफ्रीका में सूडान, कांगो, घाना, अंगोला, रोडेशिया, नाइजीरिया तथा ग्वाटेमाला आदि आते हैं।

(ii) द्वितीय अवस्था में जन्म एवं मृत्यु दर दोनों ही उच्च होती है परन्तु स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के कारण मृत्यु दर गिरती हुई अवस्था में प्रतीत होती है। अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश जो सन् 2000 तक प्रथम अवस्था में थे अब साक्षरता एवं नगरीकरण के बढ़ने से इस अवस्था में आते जा रहे हैं। जहाँ जनसंख्या में वृद्धि दिखाई दे रही है।

(iii) तृतीय अवस्था में उच्च जन्म दर एवं मध्यम मृत्यु दर होती है अतः जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि होती है। भारत के सभी उत्तरी राज्य, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल इस वर्ग में सम्मिलित होते हैं।

(iv) चतुर्थ अवस्था में जन्म दर मध्यम और मृत्यु दर निम्न होती है। विश्व के न्यूजीलेण्ड, आस्ट्रेलिया, चिली, अर्जेन्टाइना, संयुक्त राज्य अमेरिका, मलेशिया, थाईलेण्ड, चीन एवं बांग्लादेश इसी वर्ग में है।

(v) पंचम अवस्था में निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर होती है ऐसी अवस्था में जनसंख्या के घट जाने का भय रहता है। पश्चिमी यूरोप के लगभग सभी देश और जापान इस वर्ग में पहुँच चुके हैं। इस अवस्था में आने पर राष्ट्रों की मानव शक्ति दुर्बल हो जाती है। उदाहरण के लिये रूस की जनसंख्या 1990 में 1480 लाख थी जो 2007 में 1420 लाख रह गई और 2020 में इसके 1380 लाख रह जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

(i) विश्व का दो तिहाई भाग निर्जन प्रायः है तथा 90 प्रतिशत भू–भाग पर मात्र 10 प्रतिशत जनसंख्या रहती है।

(ii) विश्व की 85 प्रतिशत जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में तथा 15 प्रतिशत जनसंख्या दक्षिणी गोलार्द्ध में पायी जाती है।

(iii) विश्व की लगभग 30 प्रतिशत जनंसख्या सागर तल से 500 मीटर की ऊँचाई तक के क्षेत्र में निवास करती है।

(iv) विश्व की जनसंख्या का औसत घनत्व 44 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

(v) जनसंख्या घनत्व के प्रमुख प्रकार आंकिक जनसंख्या घनत्व, कायिक घनत्व एवं कृषि घनत्व है।

(vi) एशिया महाद्वीप में विश्व की लगभग 60.3 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

(vii) जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के तीन बड़े देश चीन, भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका है।

(viii) सन् 1650 में विश्व की जनसंख्या लगभग 55 करोड़ थी जो 1750 में 80 करोड़ हो गयी।

(ix) विश्व की जनसंख्या के दो गुना होने तथा प्रति अरब जनसंख्या बढ़ने की अवधि में निरन्तर गिरावट आती रही है।

(x) जनसंख्या सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण के लिए जनसंख्या आकार को सीमित करना अनिवार्य है।

(xi) जनसंख्या वृद्धि को कुल संख्या का प्रतिशत में व्यक्त किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1. विश्व में दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है?
   (अ) चीन (ब) भारत
   (स) इण्डोनेशिया (द) यू.एस.ए.
2. संसार का सबसे बड़ा जनसमूह निवास करता है?
   (अ) यूरोप (ब) एशिया
   (स) अफ्रीका (द) द. अमेरिका
3. विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व देश में है?
   (अ) बांग्लादेश (ब) भारत
   (स) चीन (द) ताइवान
4. जनसंख्या घनत्व में कार्यिक घनत्व है?
   (अ) जनसंख्या कुल क्षेत्रफल
   (ब) जनसंख्सा कृषि भूमि क्षेत्र
   (स) कृषक जनसंख्या कृषि भूमि क्षेत्र
   (द) जनसंख्या संसाधन
5. उत्तरी अमेरिका में जनसंख्या प्रवास किस महाद्वीप से सर्वाधिक है?
   (अ) एशिया (ब) यूरोप
   (स) दक्षिणी अमेरिका (द) अफ्रीका

6. सन् 2015 के अनुसार विश्व का जनसंख्या घनत्व है?

(अ) 57 (ब) 42

(स) 47 (द) 55

7. विश्व में वर्ष 2025 तक अनुमानित जनसंख्या होगी?

(अ) 781.8 करोड़ (ब) 903.6 करोड़

(स) 886.9 करोड़ (द) 960.6 करोड़

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

8. सन् 2013 में विश्व की जनसंख्या कितनी थी।
9. उत्तरी अमेरिका में जनसंख्या का सर्वाधिक संकेन्द्रण किस प्रदेश में है।
10. उत्तरी गोलार्द्ध में विश्व की कितनी प्रतिशत जनसंख्या रहती है।
11. प्रवास के कारण किस महाद्वीप में जनसंख्या वृद्धि सर्वाधिक हुई है।
12. विगत 350 वर्षों में विश्व की जनसंख्या कितना गुना बढ़ी है।
13. जनसंख्या संक्रमण सिद्धान्त के अनुसार भारत कौनसी अवस्था में आता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

14. जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारकों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
15. जनसंख्या घनत्व ज्ञान करने की प्रमुख विधियों के सूत्र लिखिए।
16. विश्व में जनसंख्या संकेन्द्रण के प्रमुख क्षेत्र बताइए।
17. जनसंख्या वृद्धि से क्या तात्पर्य है?
18. जनसंख्या संक्रमण सिद्धान्त की अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

19. विश्व में जनसंख्या घनत्व वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।
20. जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से विश्व की जनसंख्या को वर्गीकृत कीजिए।
21. विश्व की जनसंख्या की वृद्धि की विवेचना कीजिए।

आंकिक प्रश्न

22. सन् 1650 से 2000 तक विश्व में जनसंख्या वृद्धि को आरेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।
23. विश्व मानचित्र में जनसंख्या धनत्व को प्रदर्शित कीजिए।

पाठ 04
विश्व : जनसंख्या संरचना
(World : Population Structure)

मानव की सभी आर्थिक गतिविधियाँ प्राकृतिक संसाधनों तथा जनसंख्या से जुड़ी होती है। जनसंख्या की संरचना का अध्ययन किसी भी क्षेत्र के प्रादेशिक विकास नियोजन के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है। जनसंख्या संरचना के अन्तर्गत सामान्यतः आयु वर्ग, स्त्री–पुरूष अनुपात, व्यवसाय, ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या, साक्षरता आदि पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। विश्व स्तर पर उल्लेखित सभी पहलुओं में प्रादेशिक अन्तर पाया जाता है। जनसंख्या संरचना या संघटन या जनांकिकी संरचना में (अ) आयु संरचना, (ब) लिंगानुपात, (स) जनसंख्या संगठन, (द) साक्षरता एवं (य) व्यावसायिक संरचना प्रमुख घटक होते हैं।

आयु संरचना

आयु संरचना के अन्तर्गत किसी देश या प्रदेश में पाये जाने वाले विभिन्न आयु के लोगों का उनकी आयु या उम्र के अनुसार वर्गों में रखकर अध्ययन किया जाता है। किसी भी देश की जनसंख्या को सामान्यतया तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है जो क्रमशः 0–14, 15–64 और 65 वर्ष से ऊपर की आयु के होते हैं। इनमें यह विभाजन जनसंख्या की आयु संरचना कहलाता है। वृद्ध जनसंख्या वर्ग में 65 वर्ष से ऊपर की जनसंख्या आती है। किसी भी देश में कार्यशील जनसंख्या ज्ञात करने के लिए उस देश की जनसंख्या की आयु संरचना का अध्ययन आवश्यक होता हैं। इस प्रकार के अध्ययन से कार्यशील व्यक्तियों की संख्या के बढ़ने और घटने का आभास हो जाता है। कुछ पश्चिमी देशों को छोड़कर अधिकाँश देशों के आयु–सम्बन्धी आँकड़े विश्वसनीय नहीं होते हैं। 2004 के जनसंख्या संरचना के वैश्विक आँकड़ों के अनुसार विश्व में 6.8 प्रतिशत जनसंख्या वृद्ध जनसंख्या है। सर्वाधिक यूरोप में 14.6 प्रतिशत इसके पश्चात् उत्तरी अमेरिका में 12.5 प्रतिशत, अफ्रीका में 3.2 प्रतिशत था एशिया में 5.8 प्रतिशत लोग वृद्ध है। राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक वृद्धों की जनसंख्या जापान (18.27) में पायी जाती है। इसके बाद जर्मनी (17.17), फ्रांस (16.21) तथा ब्रिटेन (15.9) में पायी जाती है। अनेक अफ्रीकी देशों में यह प्रतिशत 2 से 3 के मध्य ही है। इनमें इथोपिया एवं सोमालिया प्रमुख है।

सारणी 4.1 : विश्व के प्रमुख देशों में आयु संरचना

(प्रतिशत में)

देश	आयु संरचना (2004)		
	0–14	15–64	65+
विकसित देश	18.3	67.1	14.6
संयुक्त राज्य अमेरिका	21.6	66.2	12.2
आस्ट्रेलिया	20.1	67.4	12.5
फ्रांस	18.6	65.2	16.2
ब्रिटेन	17.7	64.4	15.9
जर्मनी	15.2	67.7	17.1
जापान	14.3	15.2	18.2
विकासशील देश	32.2	62.6	5.2
पाकिस्तान	41.05	54.8	3.7
सूडान	39.7	56.8	3.5
बांग्लादेश	38.7	58.5	3.2
भारत	33.3	61.6	5.1
दक्षिणी अफ्रीका	33.2	65.9	3.9
इण्डोनेशिया	29.9	65.0	5.2
श्रीलंका	25.0	68.1	6.9
चीन	23.7	69.2	7.1

Source : Human Development Report, 2004

विश्व की लगभग 35.2 प्रतिशत जनसंख्या युवा वर्ग में है जिसमें सर्वाधिक भूमिका अफ्रीका (44.71%), एशिया (33.6%) की है, जबकि उत्तरी अमेरिका (22.51%), एवं दक्षिणी अमेरिका (41.5%), यूरोप (17.5%) में यह प्रतिशत कम है। राष्ट्रीय स्तर पर जापान (14.3%), जर्मनी (15.2%), ब्रिटेन (17.7%), तथा संयुक्त राज्य अमेरिका (21.6%)) आदि में यह प्रतिशत कम है जबकि विकासशील देशों में यह अधिक है।

सारणी 4.2 : विश्व के विकसित और विकाशील देशों में आयु समूह जनसंख्या वितरण (प्रतिशत)

देश	0–14	15–64	65 से अधिक
विकासशील	40.8	55.4	3.8
विकसित	26.7	63.7	9.6

Source : Human Development Report, 2004

- ➢ सामान्यतः विकासशील देशों में युवा जनसंख्या और विकसित देशों में प्रौढ़ों व वृद्धों की जनसंख्या अधिक पायी जाती है।
- ➢ असन्तुलित आयु संरचना के कारण किसी देश की आर्थिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ➢ जिन देशों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है वहाँ बच्चों की संख्या अधिक होती है।

सन् 2015 के आयु संरचना के नवीन वैश्विक आँकड़ों को आरेख 4.1 में प्रदर्शित किया गया है।

आरेख 4.1 : विश्व आयु संरचना (2015)

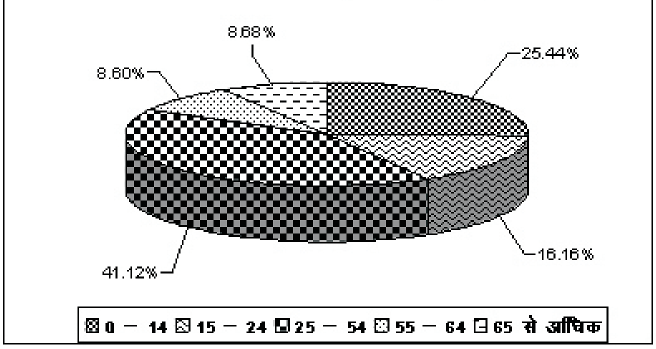

विश्व स्तर पर पाये जाने वाले तीन आयु वर्ग निम्नलिखित विशेषताओं को प्रकट करते हैं:–

(1) विश्व की कुल जनसंख्या का 35 प्रतिशत युवा वर्ग है, जो 0–14 वर्ष की आयु से सम्बन्धित है। विश्व स्तर पर इसमें प्रादेशिक भिन्नताएँ पाई जाती है। विकसित देशों में 18.3 प्रतिशत तथा विकासशील देशों में 32.2 प्रतिशत जनसंख्या इस आयु वर्ग से जुड़ी है। जिन देशों में जन्म दर उच्च है वहाँ इस वर्ग में जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है।

(2) प्रौढ़ आयु वर्ग की जनसंख्या दूसरे वर्ग में रखी जाती है। यह जनसंख्या दूसरे वर्गों से अधिक होती है। इस वर्ग की जनसंख्या प्रजननशील, आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक उत्पादक तथा जनांकिकीय दृष्टि से सबसे गतिशील होती है। किसी भी देश का विकास स्तर इस जनसंख्या वर्ग से सम्बन्धित होता है।

(3) वृद्ध आयु वर्ग की जनसंख्या ऐसे देशों में अधिक पायी जाती है जहाँ जनांकिकीय विकास क्रम पूरा कर लिया जाता है। अधिकाँश विकसित देश इस वर्ग से जुड़े हैं।

लिंगानुपात

जनसंख्या में लिंग अनुपात पुरुष तथा स्त्रियों के बीच सन्तुलन का एक सूचक होता है। लिंग अनुपात ज्ञात करने हेतु प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की ज्ञात की जाती है। कुछ देशों में यह निम्न सूत्र द्वारा परिकलित किया जाता है।

$$\frac{\text{पुरुषों की जनसंख्या}}{\text{स्त्रियों की जनसंख्या}} \times 1000$$

अथवा प्रति हजार स्त्रियों पर पुरुषों की संख्या।

भारत में इस सूत्र का प्रयोग कर लिंगानुपात ज्ञात किया जाता है।

$$\frac{\text{स्त्रियों की जनसंख्या}}{\text{पुरुषों की जनसंख्या}} \times 1000$$

अथवा प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या

सामान्यतः विश्व के लगभग सभी देशों में पुरुष जन्म स्त्री–जन्म से अधिक होता है। परन्तु जन्म के पश्चात् ही परिस्थितियाँ इस स्थिति को परिवर्तित कर देती है। जिन प्रदेशों में लिंग भेदभाव अनियंत्रित होता है, वहाँ लिंग अनुपात निश्चित रूप से स्त्रियों के प्रतिकूल होता है। इन क्षेत्रों में स्त्री भ्रूण हत्या तथा स्त्री–शिशु हत्या और स्त्रियों के प्रति घरेलू हिंसा की प्रथा प्रचलित है। विकासशील देशों जैसे भारत, पाकिस्तान आदि में सामान्यतः स्त्रियों को समाज में गौण स्थान प्राप्त होने के कारण उनमें प्रजनन के समय हुई, मृत्यु दर अधिक ऊँची होती है। इसमें प्रतिकूल लिंगानुपात बढ़ता है तथा समस्त लिंगानुपात अधिकतर महिलाओं के प्रतिकूल हो जाता है।

सारणी 4.3 एवं आरेख 4.2 में महाद्वीपों के अनुसार विश्व लिंगानुपात को दर्शाया गया है।

सारणी 4.3 : विश्व लिंगानुपात 2004

विश्व व महाद्वीप	लिंगानुपात (प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या)
विश्व	985
एशिया	1002
अफ्रीका	957
यूरोप	1072
लेटिन अमेरिका	1018
उत्तरी अमेरिका	1027
ओशेनिया	990

स्रोत : जनसंख्या विभाग, यूनाइटेड नेशनश संदर्भिका, 2001

आरेख 4.2 : विश्व लिंगानुपात, 2004

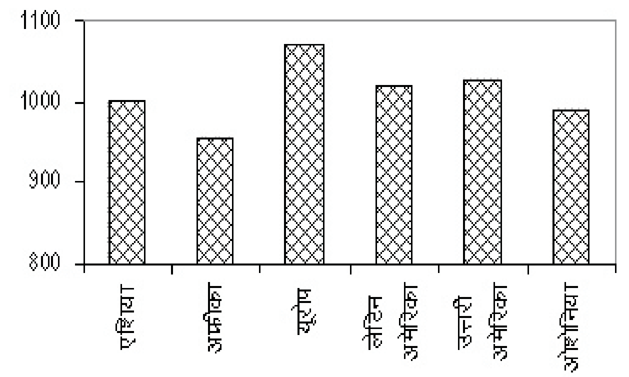

विश्व के विभिन्न देशों के ग्रामीण–नगरीय लिंगानुपात में भी अन्तर पाया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोपीय देशों में ग्रामीण तथा नगरीय लिंगानुपात एशिया के देशों से बिल्कुल भिन्न है। पश्चिमी देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों की संख्या स्त्रियों से अधिक पायी जाती है। जबकि नगरों में स्त्रियों की संख्या पुरूषों से अधिक पायी जाती है। इसका प्रमुख कारण स्त्रियों का रोजगार के लिए नगरों की ओर प्रवास करना है।

सन् 1980 में विश्व में औसत रूप से प्रति हजार पुरूषों के पीछे 993 स्त्रियां थी अर्थात् एक हजार पुरूष संख्या पर 7 स्त्रियां कम थी। वर्ष 2004 के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि यह लिंगानुपात 985 तक आ गया अर्थात एक हजार पुरूषों पर 15 स्त्रियां कम है। क्षेत्रीय स्तर पर भी इस औसत में कई गुना भिन्नता दिखाई देती है। विश्व के कई देश ऐसे हैं जहाँ स्त्रियों की संख्या पुरूषों के अनुपात में अधिक है और कई देश ऐसे हैं जहाँ स्त्रियों के अनुपात में पुरूषों की संख्या अधिक है। लिंगानुपात की इस भिन्नता के आधार पर विश्व को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) अत्यधिक स्त्री अधिकता वाले देश : इस श्रेणी में 1050 से अधिक लिंगानुपात वाले देश सम्मिलित होते हैं जिसमें पश्चिमी यूरोपीय देश, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या अत्यधिक है।

(ब) स्त्री अधिकता वाले देश : इस श्रेणी में 1050 से 1000 लिंगानुपात रखने वाले देश जैसे यूक्रेन, बेलारूस, पोलेण्ड, मंगोलिया, कजाकिस्तान, थाईलेण्ड, कम्बोडिया, म्यॉंनमार, दक्षिण अफ्रीकी देश है।

(स) पुरुष अधिकता वाले देश : इस वर्ग के देशों में लिंगानुपात 1000 से 950 के मध्य पाया जाता है। इसमें आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, चीन, कोरिया, मेक्सिको, ब्राजील, इरान और क्यूबा देशों में पुरूषों की अधिकता है।

(द) अत्यधिक पुरूष अधिकता : विश्व के कई देशों में 950 से भी कम लिंगानुपात पाया जाता है। भारत इस श्रेणी का मुख्य प्रतिनिधित्व करता देश है। जहाँ घटता लिंगानुपात जनसंख्या के असन्तुलन के लिये चिन्ताजनक है।

विश्व स्तर पर भी लिंगानुपात में पुरूषों की प्रधानता बताता है, लेकिन अफ्रीका, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका व यूरोप महाद्वीपों में स्त्रियों का अनुपात पुरूषों से अधिक पाया जाता है।

भारत जैसे विकासशील देश में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का अनुपात कम पाया जाता है। इसका मुख्य कारण यहाँ के समाज का परम्परावादी होना है। स्त्रियों में शिक्षा, रोजगार अवसर, सुरक्षा तथा समाज में उचित स्थान प्राप्त नहीं होना इसके मुख्य कारण है।

जनसंख्या संघटन

जनसंख्या संघटन में किसी देश की नगरीय व ग्रामीण जनसंख्या के अनुपात को देखा जाता है। गाँवों में रहने वाली कृषि अथवा, प्राकृतिक क्रिया– कलापों में संलग्न जनसंख्या को ग्रामीण जनसंख्या और नगरों में निवास करने वाली गैर–कृषि कार्य जैसे उद्योग व अन्य सेवाओं में संलग्न जनसंख्या को नगरीय जनसंख्या कहते हैं। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में आयु–लिंग संघटन, व्यावसायिक संरचना, जनसंख्या का घनत्व तथा विकास स्तर अलग–अलग होता है।

विश्व की कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत से अधिक नगरों में निवास करता है। विश्व स्तर पर नगरीय जनसंख्या में प्रतिवर्ष 6 करोड़ की वृद्धि हो रही है, जो ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि से तीन गुना अधिक है। एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीप में 38 प्रतिशत जनसंख्या

का निवास नगरों में है, जबकि उ. अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोपीय देशों में 75–78 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। सारणी 4.4 और आरेख 4.3 में विश्व जनसंख्या के संघटन को दर्शाया गया है।

सारणी 4.4 : विश्व की ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

(मिलियन में)

महाद्वीप	कुल जनसंख्या करोड़ में	नगरीय जनसंख्या		ग्रामीण जनसंख्या	
		करोड़ में	प्रतिशत	करोड़ में	प्रतिशत
एशिया	368.2	138.3	38.0	229.9	62.0
अफ्रीका	78.4	29.5	38.0	48.9	62.0
यूरोप	79.2	54.6	75.0	18.3	25.0
द. अमेरिका	51.9	39.1	75.0	12.8	25.0
उ. अमेरिका	31.0	23.9	77.0	7.1	23.0
ओशेनिया	3.0	2.1	70.0	0.9	30.0

स्रोत : जनसंख्या विभाग, यूनाइटेड नेशनश संदर्भिका, 2004

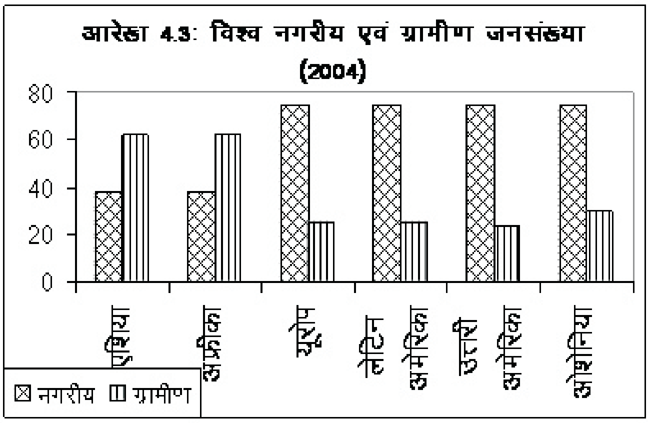

सन् 1800 ई. तक विश्व की केवल 2.5 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी। यह 1960 में बढ़कर 35 प्रतिशत, 1999 में बढ़कर 45 प्रतिशत तथा 2004 तक 50 प्रतिशत से अधिक हो गई। विकासशील देशों में एक महत्त्वपूर्ण लक्षण बड़े–बढ़े नगरों की संख्या में वृद्धि होना है। विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या नगरों में निवास करती है। 1960 से 2000 तक नगरीय जनसंख्या 80 करोड़ से बढ़कर 290 करोड़ हो गई। यह तीन गुने से अधिक वृद्धि है। इसी अवधि में विश्व की कुल जनसंख्या में मात्र दो गुना 3 अरब से 6 अरब वृद्धि अंकित की गई। एक जनसंख्या प्रक्षेपण के अनुसार सन् 2030 ई. तक नगरीय जनसंख्या 8 अरब तक बढ़ जायेगी।

विश्व जनसंख्या के आँकड़ें बताते हैं कि 1975 में विश्व की 38 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी जो 2004 में 48 प्रतिशत हो चुकी है अनुमान है कि 2025 तक विश्व की 61 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय हो जायेगी।

सम्पूर्ण विश्व में ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या के वितरण में अत्यधिक असमानताएँ दिखाई देती है। नगरीय जनसंख्या के वितरण के अनुसार विश्व में वितरण का वर्गीकरण इस प्रकार है।

(अ) उच्च नगरीय जनसंख्या : इस वर्ग में विश्व के वे देश आते हैं जिनमें नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 60 से अधिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, जापान, सिंगापुर, अर्जेन्टाइना एवं यूरोप महाद्वीप के अधिकांश देशों में नगरीय जनसंख्या का उच्च प्रतिशत पाया जाता है।

(ब) मध्यम नगरीय जनसंख्या : इस वर्ग में विश्व के वे देश सम्मिलित होते हैं जिनमें नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 40 से 60 तक पाया जाता है। चीन, इण्डोनेशिया, द. अफ्रीका, मिश्र, वेनेजुऐला, क्यूबा, जेमैका और हैती आदि देश मध्यम नगरीय जनसंख्या रखते हैं।

(स) न्यून नगरीय जनसंख्या : इस वर्ग 40 प्रतिशत से कम नगरीय जनसंख्या वाले देशों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, दक्षिणी पूर्वी एशिया एवं अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश सम्मिलित होते हैं।

साक्षरता

साक्षरता द्वारा जनसंख्या के गुणात्मक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। यह प्रदेश के सामाजिक आर्थिक– विकास का विश्वसनीय तथा यथार्थ सूचक होता है। विश्व स्तर पर साक्षरता दर में अत्यधिक विभिन्नता पायी जाती है। साक्षरता दर कुल जनसंख्या के उस प्रतिशत को प्रदर्शित करती है जिसमें 7 वर्ष तथा अधिक आयु के लोग दैनिक जीवन में पढ़ तथा लिख कर एक–दूसरे को समझ व समझा सके। मानव विकास सूचकांक के निर्धारण में साक्षरता को सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति का विश्वसनीय सूचक माना जाता है। वास्तव में गरीबी उन्मूलन, कृषिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए साक्षरता आवश्यक तत्व है इसलिए साक्षरता जनसंख्या के प्रजनन, मृत्यु दर, गत्यात्मकता तथा व्यवसाय आदि पक्षों को प्रभावित करती है। अतः किसी समाज में शिक्षा को उपयुक्त अवसर प्राप्ति का प्रमुख स्रोत माना जाता है। इसलिए किसी क्षेत्र के सम्पूर्ण सामाजिक–आर्थिक व्यक्तित्व के ज्ञानार्थ साक्षरता का महत्व सर्वाधिक है।

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारकों में आर्थिक विकास का स्तर, नगरीकरण जीवन स्तर, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न सुविधाओं तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख है। आर्थिक विकास का स्तर साक्षरता के कारण ही संभव हो पाता है। सारणी 4.5 एवं 4.6 में विश्व साक्षरता के आँकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 4.5 : विश्व साक्षरता — 2008

प्रदेश	15 वर्ष और उससे अधिक जनसंख्या का %	15 से 24 वर्ष तक के लोगों का %
विकासशील देश	76.6	85.2
अल्प विकसित देश	54.2	64.2
अरब राष्ट्र	64.1	81.3
पू. एशिया	90.4	98.0
लेटिन अमेरिका	89.6	95.9
द. एशिया	58.9	72.2
उप सहारा अफ्रीका	61.3	73.7
मध्य व पूर्वी यूरोप	99.2	99.5

स्रोत : मानव विकास रिपोर्ट, 2008, ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटी प्रेस

सारणी 4.6 : विश्व शत–प्रतिशत साक्षरता वाले देश

देश का नाम	साक्षरता 15 या उससे अधिक आयु (2008)
जापान	100
आस्ट्रेलिया	100
डेनमार्क	100
फिनलैण्ड	100
स्वीडन	100
नार्वे	100
विश्व	77

स्रोत : मानव विकास रिपोर्ट, 2008, ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटी प्रेस

जिन देशों में साक्षरता एवं शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है वहाँ की जनसंख्या विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति व विकास करती है। विश्व स्तर पर सभी देशों की सरकार इस और प्रयत्नशील रहती है कि उन्नत तथा नगरीय अर्थ व्यवस्थाएँ उच्चतर साक्षरता दर तथा उच्चतर शैक्षणिक स्तर को प्रतिबिम्बित करती है। विकासशील देशों को इस ओर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न व्यवसाय अथवा कार्यों में सलग्नता का अध्ययन किया जाता है। परिश्रम युक्त व्यवसायिक कार्यों में जुड़ी तथा इन्हीं कार्यों से जीविकोपार्जन करने वाली जनसंख्या को आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या कहा जाता है। किसी निश्चित आर्थिक कार्य के अन्तर्गत जुड़ी हुई है इसी सक्रिय जनसंख्या के आनुपातिक वितरण को जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना कहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार कई प्रकार के व्यावसायिक वर्ग होते हैं जैसे– कृषि, वानिकी, आखेट, मत्स्य पालन, पशुपालन, खनन उत्खनन, विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य, बिजली गैस, जल एवं स्वास्थ्य सेवाएं, वाणिज्य, परिवहन, भण्डारण एवं संचार सेवाएँ तथा अनेक अवर्गीकृत व्यवसाय। यह वर्गीकरण अन्तर्राष्ट्रीय तुलना के लिए होता है, लेकिन प्रत्येक देश अपनी जनसंख्या को अपनी आवश्यकतानुसार अलग–अलग व्यावसायिक वर्गों में वर्गीकृत करता है।

कार्यशील जनसंख्या (अर्थात् 15–59 आयु वर्ग में स्त्री और पुरूष), कृषि, वानिकी, मत्स्य, विनिर्माण, निर्माण, व्यावसायिक परिवहन, सेवाओं, संचार तथा अन्य अवर्गीकृत सेवाओं में संलग्न हैं। जिन देशों में अल्प विकसित अर्थ व्यवस्था पायी जाती है, वहाँ प्राथमिक व्यवसाय में जनसंख्या का अनुपात अधिक सक्रिय रहता है। विश्व के विकासशील देशों या विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में द्वितीयक तथा तृतीयक कार्यों में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात अधिक सक्रिय होता है।

अति विकसित या औद्योगीकृत देशों में तृतीयक व्यवसाय में 40–45 प्रतिशत तक कार्यशील जनसंख्या सक्रिय रहती है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा पश्चिम यूरोपीय देशों में इस व्यवसाय में 60–70 प्रतिशत तक जनसंख्या जुड़ी है। चतुर्थक व्यवसाय का प्रतिशत जनसंख्या में तुलनात्मक रूप से कम पाया जाता है, लेकिन इनकी आय सर्वाधिक होती है। इस व्यवसाय से सम्बन्धित जनसंख्या अपने विचारों शोध आदि कार्यों से समय को गतिशीलता प्रदान करती है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. जनसंख्या संरचना जनसंख्या की इन विशेषताओं को प्रदर्शित करती है, जिनको मापा जा सकता है।
2. विभिन्न आयु वर्गों में लोगों की संख्या को जनसंख्या की आयु संरचना कहते हैं।
3. विभिन्न आयु वर्गों के आकार जनसंख्या अनुसार तथा समयानुसार बदलते रहते हैं।
4. आयु वर्ग, लिंगानुपात, साक्षरता, ग्रामीण–नगरीय

जनसंख्या–अनुपात, जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना आदि जनसंख्या संघटन को प्रदर्शित करने वाले महत्वपूर्ण घटक होते हैं।

5. पुरूष तथा स्त्रियों के बीच सन्तुलन के सूचक को जनसंख्या का लिंगानुपात कहते हैं।
6. नगरीय जनसंख्या गैर कृषि या औद्योगिक एवं निर्माण कार्यों में संलग्न होती है।
7. विश्व की नगरीय जनसंख्या में प्रतिवर्ष, 6 करोड़ की वृद्धि हो रही है। जो ग्रामीण जनसंख्या में हो रही वृद्धि का लगभग तीन गुना है।
8. 1960 से 2000 के बीच नगरीय जनसंख्या 80 करोड़ से बढ़कर 290 करोड़ हो गई। यह वृद्धि तीन गुने से अधिक है।
9. साक्षरता जनसंख्या की एक गुणात्मक विशेषता होती है जो किसी क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक विकास का एक विश्वसनीय तथा यथार्थ सूचक होता है।
10 व्यावसायिक जनसंख्या के अन्तर्गत युवा व प्रौढ़ वर्ग (15–59 वर्ष तक) को ही सम्मिलित किया गया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. वृद्ध आयु जनसंख्या वर्ग में कितने वर्ष से ऊपर की जनसंख्या सम्मिलित होती है।

   (अ) 60 वर्ष(ब) 62 वर्ष

   (स) 68 वर्ष(द) 65 वर्ष

2. विश्व के सर्वाधिक वृद्ध व्यक्तियों का प्रतिशत किस देश में है–

   (अ) भारत (ब) जापान

   (स) चीन (द) दक्षिण अफ्रीका

3. विश्व में किस आयु वर्ग का प्रतिशत सर्वाधिक है–

   (अ) 65 वर्ष से अधिक (ब) 0–14 वर्ष

   (स) 25 से 54 वर्ष (स) उपर्युक्त सभी

4. शत–प्रतिशत साक्षरता वाला देश है–

   (अ) जापान (ब) भारत

   (स) चीन (द) यू.एस.ए.

5. उच्च नगरीय जनसंख्या किस देश में पाई जाती है–

   (अ) मिश्र (ब) सिंगापुर

   (स) बांग्लादेश (द) भारत

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

6. आयु वर्ग के अनुसार किस वर्ग में सर्वाधिक जनसंख्या पायी जाती है।
7. जनसंख्या संरचना में बाल वर्ग किस आयु वर्ग से सम्बन्धित है।
8. साक्षरता का महत्व बताइए।
0. कृषि किस प्रकार के व्यावसायिक वर्ग से सम्बन्धित है?
10. विश्व में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या किस महाद्वीप में है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

11. जनसंख्या संरचना या संघटन से क्या तात्पर्य है।
12. लिंग अनुपात किसे कहते हैं।
13. विकासशील देशों में नगरीकरण की दर तेजी से क्यों बढ़ रही है।
14. आयु–संरचना का क्या महत्त्व हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न

15. जनसंख्या के ग्रामीण–नगरीय संघटन का वर्णन कीजिए।
16. लिंग–संरचना द्वारा प्रकट की जाने वाली विश्व जनसंख्या की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

आंकिक प्रश्न

17. विश्व लिंगानुपात के आंकड़ों को पिरामिड आरेख में प्रदर्शित कीजिए।

पाठ 05
जनसंख्या : प्रवास एवं मानव विकास
(Population : Migration and Human Development)

जनसंख्या प्रवास—संकल्पना

मानव एक सामाजिक प्राणी होने के साथ—साथ एक गतिशील प्राणी है। वस्तुतः मानव विकास की प्रत्येक अवस्था में गतिशीलता जनसंख्या की एक आधारभूत विशेषता रही है। अतः मनुष्य प्रागैतिहासिक काल से ही विभिन्न प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कारकों से प्रभावित होकर एक स्थान विशेष से दूसरे स्थान की ओर प्रवास करता रहा है। आज जब गतिशीलता के अधिक अवसर उपलब्ध है, तो स्थानान्तरण मानव इच्छा का कारण बनता है। इसीलिए प्रवास को सामान्य जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कुछ निश्चित संख्या में मनुष्यों के परिवर्तन के रूप में ही नहीं देखा जाता बल्कि बसने के लिए चुने गए स्थानों एवं छोड़े गए स्थानों दोनों ही समाजों के सामाजिक, व्यावसायिक, जनांकिकी संरचना में भी परिवर्तन के कारण के रूप में समझा जाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार "प्रवसन एक प्रकार की भौगोलिक या स्थानिक प्रवासिता है, जो एक भौगोलिक इकाई तथा दूसरी भौगोलिक इकाई के मध्य देखने को मिलती है, जिनमें रहने का मूल स्थान अथवा पहुँचने का स्थान दोनों भिन्न होते हैं। इस प्रकार का प्रवसन अधिकतर स्थायी होता है, क्योंकि इसमें मानव का निवास स्थान स्थायी रूप से परिवर्तित हो जाता है।"

बोग महोदय ने प्रवास को परिभाषित करते हुए कहा है कि— "एक मानव समुदाय या समूह द्वारा अपने स्थान को त्यागकर किसी अन्य स्थान पर जाकर रहना या बसना ही प्रवसन कहलाता है।"

प्रवास के प्रकार

पृथ्वी के विभिन्न भागों में एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में मानव वर्गों का प्रवास होता रहता है, इसे हम जनसंख्या का स्थानान्तरण भी कहते हैं— प्रवास के दो भेद है—

1. उत्प्रवास

स्थानान्तरण की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक स्थान से मनुष्य दूसरे स्थान को जाते हैं। जैसे— यूरोप से उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में गमन हुआ है।

2. आप्रवास

आगमन की प्रक्रिया जिसके द्वारा बाहरी स्थानों से मानव किसी प्रदेश या स्थान के अन्दर आते हैं। जैसे— उत्तरी अमेरिका में ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, फ्रांस आदि देशों से मनुष्यों का आप्रवास होता रहा है।

मानव प्रवास के पक्ष

मानव प्रवास का अध्ययन विभिन्न पक्षों में किया जा सकता है। जिससे प्रवसन का क्षेत्र, अवधि एवं प्रवसन करने वाले लोगों की संख्या, आयु, लिंग, धर्म, प्रजाति आदि प्रमुख है।

प्रत्येक जनसंख्या प्रवास के 5 पक्ष होते हैं, जिनमें विभिन्न दृष्टिकोणों से किसी प्रवास पर विचार किया जाता है।

(i) देश पक्ष
(ii) काल पक्ष
(iii) कारण पक्ष
(iv) संख्या पक्ष

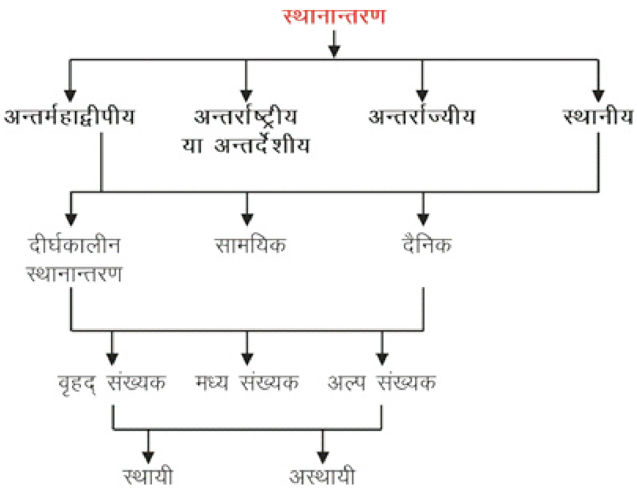

रेखाचित्र 5.1 : देश, काल, संख्या और अस्थिरता के अनुसार स्थानान्तरण के प्रकार

(i) देश पक्ष : इसमें यह विचार किया जाता है कि जनसंख्या किस प्रदेश या क्षेत्र से कहाँ को प्रवास करती है। अन्तर्महाद्विपीय प्रवास, अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास, अन्तर्राज्यीय प्रवास एंव स्थानीय प्रवास प्रमुख है।

(ii) काल पक्ष : इसमें दीर्घकालीन प्रवास, सामयिक प्रवास दैनिक प्रवास, आदि का अध्ययन किया जाता है।

(iii) कारण पक्ष : इसमें जनसंख्या प्रवास के कारणों पर विचार किया जाता है। भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक कारण आदि प्रमुख है।

(iv) संख्या पक्ष : प्रवास के संख्या पक्ष में इस बात का विचार किया जाता है कि किसी देश से बाहर जाने वाली प्रवासित या उत्प्रवासी जनता, और बाहरी देशों से आने वाली अप्रवासी जनता की संख्या कितनी है।

(v) स्थिरता पक्ष : ऐसे प्रवास जिनमें प्रवासी जनता नये देशों में जाकर स्थायी प्रकार से बस जाती है। अमेरिका, दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि में यूरोपीय लोग स्थाई प्रकार से बस गये।

प्रवास के प्रकार

प्रवास मुख्यतया एक देश या एक महाद्वीप से दूसरे देशों या एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य होता है। इस आधार पर इसे दो भागों में बांटा जा सकता है।

(अ) अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास
(ब) अन्तर्देशीय या आन्तरिक प्रवास

(अ) अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास

विश्व में एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में या एक देश से दूसरे देश में लोगों के होने वाले प्रवास को अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास कहते हैं। लोगों का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थानान्तरण अधिकतर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कारणों से हुआ है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक मनुष्य किसी न किसी कारण से प्रभावित होकर स्थानान्तरण करता रहा है। वर्तमान में स्थानान्तरण रोजगार प्राप्ति के लिए भी किया जा रहा है।

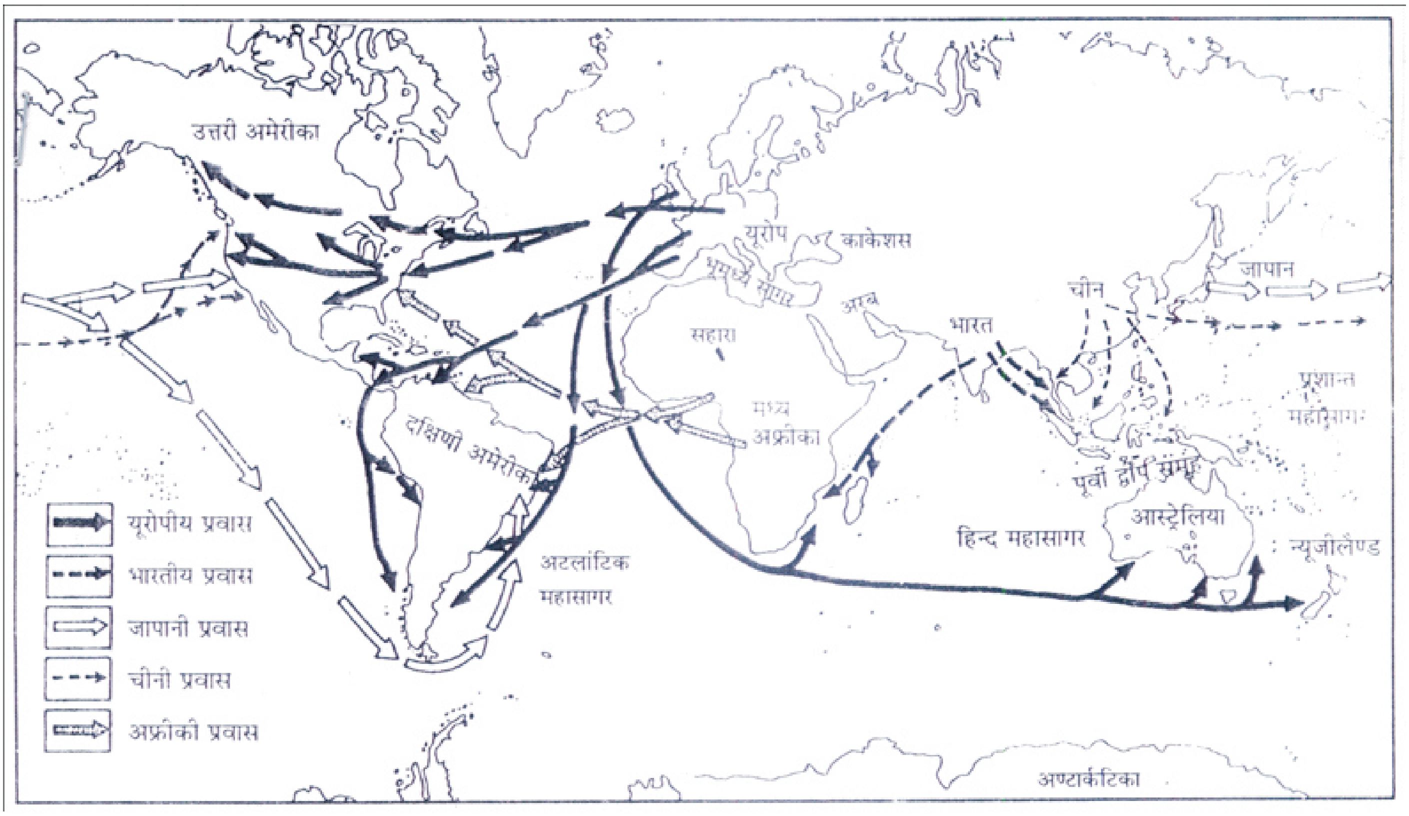

मानचित्र 5.1 : प्राचील काल में मानव जातियों का प्रवास

विश्व के प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास

(i) यूरोपीय प्रवास : यूरोप महाद्वीप के उत्तरी– पश्चिमी भाग से दूसरों देशों में प्रवास अधिक रहा है। इस क्षेत्र के लोग समुद्री मार्ग से होकर 12वीं शताब्दी से 20 वीं शताब्दी तक विश्व के अनेक देशों में जाकर स्थायी रूप से रहने लग गए। यूरोप महाद्वीप में संसाधनों की कमी तथा जीवन स्तर के गिरने के दबाव के कारण यहाँ से विश्व के अन्य ज्ञात देशों की ओर प्रवास करने लगे। यूरोप के पश्चिमी भाग में समुद्री तट पर स्थित देशों ईंग्लैण्ड, फ्रांस जर्मनी, पुर्तगाल, स्पेन, नीदरलैण्ड आदि देशों के लोग समुद्री मार्ग से होकर अफ्रीका, एशिया तथा अमेरिकी महाद्वीप के देशों में प्रवासित हो गये। अपनी उच्च तकनीकी के उपयोग से वहाँ जाकर इन लोगों ने संसाधनों का अति तीव्र गति से दोहन किया।

यूरोपीय देशों के नागरिक यहाँ स्थानान्तरित होकर विश्व के दो मुख्य भागों में जाकर बस गये।

(अ) उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र : उत्तरी अमेरिका एवं दक्षिणी अमेरिका के समुद्र तटीय उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में जहाँ सुगमता से जाया जा सकता था।

एशिया महाद्वीप के दक्षिणी–पूर्वी भाग में स्थित देश, यहाँ जाकर इन लोगों ने कपास, गन्ना, गर्म मसाले, तम्बाकू, कहवा, चाय, चावल आदि व्यापारिक फसलों का उत्पादन प्रारम्भ किया गया। इन बागानों पर मजदूरी करवाने के लिए यूरोपीय लोग अन्य देशों से बन्धुआ मजदूर पकड़कर लाते थे।

(ब) शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र : यह जलवायु यूरोपीय लोगों के लिए अनुकूल थी जिस कारण इन क्षेत्रों में ये लोग स्थायी रूप से जाकर बस गये । इन क्षेत्रों में जनसंख्या भी यूरोपीय लोगों के आगमन के पूर्व बहुत विरल थी। अतः इन्हें वहाँ जाकर स्थायी रूप से रहने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्य, कनाड़ा, दक्षिणी, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित देशों में इन लोगों की संख्या अधिकतम पायी जाती है।

यूरोपीय लोगों का दूसरे देशों में प्रवास सन् 1820 से पूर्व बहुत कम था लेकिन इसे बाद बढ़ती जनसंख्या व घटते आर्थिक संसाधनों के कारण 1820 से 1940 के मध्य लगभग 6 करोड़ से अधिक यूरोपीय लोग विश्व के अन्य देशों में जाकर स्थायी रूप से बस गये। संयुक्त राज्य अमेरिका निश्चित ही सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता देश था और 1840 से 1914 के बीच इसने 5 करोड़ लोगों को शरण दी जिनसे 4 करोड़ लोग अन्तिम 34 वर्षों में ही आए थे।

(ii) एशियाई देशों से प्रवास : मानव शास्त्रियों का मत है कि मानव प्रजातियों की उत्पत्ति मध्य एशियाई भाग में हुई। जलवायु की दशाओं के परिवर्तन होते रहने एवं नवीन प्रजाति द्वारा प्राचीन प्रजाति को स्थान विशेष से बाहर की ओर खदेड़ने के कारण प्रागैतिहासिक काल में मध्य एशिया से विभिन्न प्रजातियाँ प्रवासित होकर विश्व के विभिन्न भागों में जाकर स्थायी रूप से बस गयी (चित्र 5.1)।

18वीं शताब्दी के बाद बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण चीन, भारत एवं जापान के लोग अपने पड़ोसी देशों में प्रवासित हो गये एवं वहाँ स्थायी रूप से रहने लगे। क्योंकि उस समय पड़ोसी देशों की जनसंख्या बहत कम थी। चीन से बहुत लोग 20वीं शताब्दी के पहले एशिया के दक्षिणी–पूर्वी भाग में स्थित देशों मंचुरिया, कोरिया, मलेशिया, थाईलैण्ड, हिन्देशिया, वियतनाम, फिलीपीन्स, म्यांमार आदि विरल जनसंख्या वाले देशों में जाकर बस गये। इसके अलावा चीनी लोग अमेरिका, अफ्रीका देशों में भी जाकर स्थायी रूप से रहने लगे। जापान एक छोटा देश होने के कारण यहाँ प्रारम्भ से ही जनसंख्या दबाव अधिक रहा है। अतः यहाँ से जापानी लोग 1880 से 1900 के मध्य हवाई द्वीप, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाड़ा, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, मंचूरिया, कोरिया, मलेशिया आदि देशों में प्रवसन कर गए।

भारत से लोगों का समीपवर्ती देशों में प्राचीन काल में अपने धार्मिक उपदेशों के प्रचार के लिए कई लोग विभिन्न देशों में गये। बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार करने के लिए बौद्ध भिक्षु प्राचीन काल में म्यांमार, श्रीलंका, मलेशिया, हिन्देशिया, आदि देशों में प्रवसन कर गये। भारत पर अंग्रेजों के शासनकाल के समय अंग्रेजों ने अपने कृषि बागानों पर मजदूरी करवाने हेतु भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिडाड स्थानान्तरित किया जो वहीं के स्थायी निवासी हो गये।

(ब) अंतर्देशीय प्रवास

एक ही देश के विभिन्न राज्यों या प्रदेशों के मध्य लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर होने वाले प्रवसन को आन्तरिक प्रवसन कहते हैं।

(i) अर्न्तप्रान्तीय प्रवास : एक ही देश में विभिन्न भागों के मध्य इस प्रकार का प्रवसन होता है। भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद एक राज्य से दूसरे राज्य के मध्य जैसे– उत्तर प्रदेश तथ हरियाणा से कई लोग दिल्ली आकर बस गये (चित्र 5.3)। राजस्थान से बहुत से लोग, महाराष्ट्र, गुजरात, आदि राज्यों में जाकर बस गये ।

चित्र 5.1 : आदी मानव का प्रवास

चित्र 5.2 : राजनैतिक कारणों से प्रवास

चित्र 5.3 : अन्तर्राज्यीय प्रवास

चित्र 5.4 : स्थानीय प्रवास

संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रारम्भ से लोग पूर्वी प्रान्तों मेंरहते थे। लेकिन धीरे–धीरे यातायात सुविधाओं तथा जनसंख्या दबाव के कारण यहाँ के लोग पश्चिमी प्रान्तों की ओर प्रवसन कर गये। रूस में 1917 की क्रांति के बाद रूसी लोग पूर्वी एवं पश्चिमी भाग से साइबेरिया के कृषि फार्मों में जाकर बस गये। अतः विश्व के लगभग प्रत्येक देश में लोग एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त की ओर व्यापार, उद्योग, कृषि, खनिज आदि में मजदूरी करने के उद्देश्य से स्थानान्तरित होते रहे हैं।

ii) स्थानीय प्रवास : स्थानीय प्रवसन में लोगों का स्थानान्तरण देश में एक ही प्रान्त के विभिन्न जनपदों के मध्य होता रहता है। ग्रामीण लोग शहरों में मजदूरी के लिए या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते रहते हैं। स्थानीय प्रवसन एक ग्राम से नगर की ओर या नगर से ग्रामीण की ओर हो सकता है। नगरों से मिलने वाली विभिन्न सुविधाएं इन्हें आकर्षित करती हैं। चित्र 5.4 मुम्बई में हजारों लोग प्रतिदिन 100 से 200 किमी तक प्रवास करते हैं।

प्रवास के परिणाम

जिस स्थान से लोग जाते हैं तथा जाकर रहने लगते हैं। इन दोनों स्थानों पर प्रवासित जनसंख्या का प्रभाव पड़ता है। प्रवसन के कारण निम्न प्रभाव पड़ते हैं–

(i) जनसंख्या संतुलन बिगड़ता है। जिस स्थान से लोग जाते हैं वहाँ की जनसंख्या कम एवं जहाँ जाकर बसते हैं वहाँ की अधिक हो जाती है।

(ii) प्रवसन के कारण संस्कृति का प्रसार, प्रवासी लोग अपने साथ अपनी तकनीकी, धर्म, परम्पराएं एवं रीति–रिवाज, भाषा आदि लेकर जाते हैं। जिसका प्रभाव उन लोगों पर पड़ता है एवं उस स्थान विशेष की संस्कृति का प्रभाव प्रवासित लोगों पर पड़ता है। ये अपनी तकनीकी ज्ञान का उपयोग करके वहाँ के आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाते हैं।

(iii) प्रवासी लोगों की वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान,

भाषा आदि के अनुसार ही उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति धीरे–धीरे परिवर्तित हो जाती है। जैसा कि अंग्रेजों के आगमन से हमारी भारतीय संस्कृति परिवर्तित हो गयी।

(iv) प्रवसन के कारण जनसंख्या दबाव, बेरोजगारी, निर्धनता आदि समस्याएँ बढ़ जाती हैं। जबकि जिस देश या स्थान से लोग प्रवसन करते हैं। वहाँ इन समस्याओं में कमी आने लगती है।

(v) प्रवासी लोगों की कार्यकुशलता, तकनीकी ज्ञान आदि के कारण उन क्षेत्रों के आर्थिक संसाधनों के विदोहन से उस देश या स्थान का आर्थिक स्तर उच्च हो जाता है। जैसे यूरोपियन लोगों के आने से अमेरिका, दक्षिण अफ्रिका आस्ट्रेलिया आदि विकसित राष्ट्र बने।

मानव विकास संकल्पना

विकास मूलतः एक बहुआयामी संकल्पना है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संस्थागत, मनोवैज्ञानिक, पारिस्थितिकीय एवं नैतिकता जैसे अनेकों पक्ष समाहित होते हैं। इसे बहुधा उस प्रक्रिया के रूप में अपनाते हैं, जिसमें लोगों के आर्थिक दशाओं में सुधार करने अथवा मानव कल्याण में वृद्धि करने अथवा जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि या उन्नयन करने का प्रयास किया जाता है। सर्वविदित है कि विकास का लक्ष्य लोगों का कल्याण ही होता है। तथापि जनकल्याण केवल धन के द्वारा ही सम्भव नहीं। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मानव कल्याण के प्रमुख पक्ष है। इन बातों को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र ने सभी सदस्य देशों के समक्ष मानव विकास की संकल्पना का लक्ष्य प्रस्तुत किया है।

अनेक दशकों तक किसी देश के विकास के स्तर को केवल आर्थिक वृद्धि के रूप में ही देखा जाता था। इसका अर्थ यह है कि जिस देश की अर्थ व्यवस्था जितनी बड़ी होती है उसे उतना ही अधिक विकसित माना जाता था। लेकिन इस वृद्धि का अधिकाँश लोगों के जीवन में परिवर्तन से कोई सम्बन्ध नहीं था। पहली बार मानव विकास संकल्पना के सम्बन्ध में प्रसिद्ध अर्द्धशास्त्री महबूब–उल–हक और प्रो. अमृर्त्य सेन ने मानव विकास की अवधारणा का प्रतिपादन किया– मानव विकास एक ऐसे विकास के रूप में होता है जो लोगों के जीवन में सुधार लाता है और उनके लिए विकल्पों में वृद्धि करता है। इस अवधारणा में सभी प्रकार के विकास का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है।

मानव विकास का विचार, समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तिकरण की संकल्पनाओं पर आधारित है।

मानव विकास सूचकांक

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ने 1990 में प्रकाशित प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन (HDI Report) में ''लोगों के विकल्पों की परिवर्द्धित करने की प्रक्रिया को मानव विकास के रूप में परिभाषित किया है। प्रतिवेदन के अनुसार, विकास सिर्फ लोगों की आय तथा पूँजी का ही विस्तार नहीं अपितु यह मानव के कार्यप्रणाली तथा क्षमताओं में वृद्धि करने का माध्यम है। दूसरे शब्दों में लोगों के जीवन विकल्पों के परिवर्द्धन की प्रक्रिया और जनकल्याण के स्तर को उपर उठाना ही मानव विकास है।

सारणी 5.1 : मानव विकास सूचकांक मूल्य (2013)

क्र.स.	देश	मानव विकास सूचकांक
1	नार्वे	0.955
2	आस्ट्रेलिया	0.938
3	संयुक्त राज्य अमेरिका	0.937
4	जर्मनी	0.920
5	स्वीडन	0.916
6	स्विट्जरलैण्ड	0.913
7	जापान	0.912
8	फ्रांस	0.893
9	यूनाईटेड किंगडम	0.875
10	अर्जेंटीना	0.811
11	क्यूबा	0.780
12	मलेशिया	0.769
13	ब्राजील	0.730
14	ईरान	0.742
15	श्रीलंका	0.715
16	चीन	0.699
17	थाईलैण्ड	0.690
18	मिश्र	0.662
19	इण्डोनेशिया	0.629
20	भारत	0.554
21	केन्या	0.519
22	पाकिस्तान	0.515
23	बांग्लादेश	0.515
24	म्यांमार	0.498
25	नेपाल	0.463
26	जाम्बिया	0.448
27	चाड	0.340
28	नाईजर	0.304

स्रोत : *HDR Report UNDP*

मानव विकास, स्वास्थ्य भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता तक सभी प्रकार के मानव विकल्पों को सम्मिलित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार और उनके शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सशक्तिकरण के अवसरों में वृद्धि की प्रक्रिया है।

मानव सूचकांक का अन्तर्राष्ट्रीय प्रारूप

वर्ष 2013 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार 186 देशों के लिए मानव विकास सूचकांक की गणना की गई। उनमें से अति उच्च मानव विकास 47 देशों में, उच्च मानव विकास 47, मध्यम मानव विकास, 47 मथा निम्न मानव विकास 35 देशों में पाया गया।

1. उच्च मानव विकास श्रेणी (0.71 से अधिक) : कुल 94 देशों नार्वे, आस्ट्रेलिया, सुयंक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैण्ड जर्मनी, शिखर पर विद्यमान रहे, लगभग सभी पश्चिमी देशों के साथ जापान, इजराइल, सिंगापुर, हाँगकाँग, कोरिया, चिली, युरुग्वे, संयुक्त अरब अमीरात भी इस प्रथम श्रेणी में स्थान प्राप्त कर पाये।

2. मध्यम मानव विकास श्रेणी (0.5 से 0.70) : इस श्रेणी में 47 देश स्थित थे। चीन, थाईलैण्ड, मंगोलिया, फिलिपींस, भारत, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश इसी श्रेणी में विद्यमान थे।

3. निम्न मानव विकास श्रेणी (0.5 से कम) : इसमें 35 देश स्थित थे, जिनमें काँगो, चाड, म्यामांर, रवांडा, सूडान, इथियोपिया, अफगानिस्तान, गिनी, नाइजर, नेपाल, जाम्बिया आदि न्यूनतम स्तर पर रहे।

तुलनात्मक निष्कर्ष

मानव विकास के शिखर पर नार्वे, आस्ट्रेलिया व संयुक्त राज्य अमेरिका प्रतिस्थापित है। जबकि चाड, काँगो तथा माली न्यूनतम स्तरपर विद्यमान है।

भारत में मानव विकास सूचकांक

भारत को मध्यम मानव विकास श्रेणी में रखा गया है। 186 देशों में इसका 138 वाँ स्थान है। भारत में विभिन्न राज्यों में केरल (0.700) सर्वोच्च स्थान पर है। इसके बाद दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, गोवा और पंजाब राज्य आते हैं। जबकि बिहार, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य देश में सबसे नीचे आते है। इसके कारण राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक घटक प्रमुख है। केरल के मानव विकास सूचकांक का सर्वोच्च होना उसके लिए उच्च साक्षरता दर को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. एक मानव समुदाय द्वारा अपने स्थान को त्यागकर किसी अन्य स्थान पर जाकर रहना या बसना ही प्रवास कहलाता है।
2. विश्व में एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में लोगों के होने वाले प्रवास को अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास कहते है।
3. वर्तमान में प्रवास रोजगार प्राप्ति के लिये किया जा रहा है।
4. प्रवास से जनसंख्या संतुलन बिगड़ता है।
5. प्रवसन के कारण संस्कृति का प्रसार होता है।
6. मानव विकास मानव की आकाँक्षाओं, अभिरूचियों एवं उपलब्ध जीवनयापन की सुविधाओं के उत्तम स्तर पर विस्तृत करने की प्रक्रिया है।
7. यू. एन. डी. पी. (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) द्वारा सन् 1990 से प्रतिवर्ष मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किया जाता है।
8. मानव विकास रिपोर्ट में भारत की स्थिति कुल 186 देशों के समूह में 138वें स्थान पर है।
9. भारत में विभिन्न राज्यों में मानव विकास की दृष्टि से केरल 0.700 सर्वोच्च स्थान पर है।
10. मानव विकास की औसत उपलब्धियों को सरल, संश्लिष्ट सूचकांक द्वारा मापा जाता है। सूचकांक का मान शून्य से एक (0–1) के बीच ही रहता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक

1. विश्व का सबसे बड़ा शरणार्थी देश कौनसा रहा है?

   (अ) संयुक्त राज्य अमेरिका (ब) जापान

   (स) कनाड़ा (द) केन्या

2. एक ही देश या राज्यों के विभिन्न प्रदेशों की ओर होने वाले प्रवास को कहते हैं?

   (अ) अप्रवास (ब) उत्प्रवास

   (स) अन्तर्राष्ट्रीय (द) अन्तर्देशीय

3. अन्तर्क्षेत्रीय प्रवास किसके मध्य होता है।

   (अ) ग्रामीण से नगर की और

   (ब) नगर से उपनगर की और

(स) नगर से महानगर की और

(द) उपर्युक्त सभी

4. वर्ष 2015 की मानव विकास रिपोर्ट में भारत कौनसे स्थान पर है–

(अ)	130वाँ	(ब)	138वाँ
(स)	120वाँ	(द)	135वाँ

5. मानव विकास सूचकाँक की रिपोर्ट कौनसा संगठन जारी करता है।

(अ)	WTO	(ब)	UNDP
(स)	WHO	(द)	UNO

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

6. मानव विकास सूचकांक का मूल्य न्यूनतम से अधिकतम किन अंकों के मध्य होता है।

7. मानव विकास रिपोर्ट, यू.एन.डी.पी. (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) द्वारा किस वर्ष में प्रकाशित की जा रही है।

8. मानव विकास की दृष्टि से भारत का कौनसा राज्य सर्वोच्च स्थान रखता है।

8. प्रवसन के कितने प्रकार है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

10. प्रवास को परिभाषित कीजिए।

11. अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन किसे कहते है?

12. मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) किसे कहते है?

13. एशिया के कौनसे देश उच्च मानव विकास की श्रेणी में आते है?

निबंधात्मक प्रश्न

14. मानव विकास की संकल्पना को विस्तार से समझाइये।

15. उच्च मानव विकास और निम्न मानव विकास समूह के देशों के मध्य पाये जाने वाले अन्तरों को विस्तार से समझाइए।

आंकिक प्रश्न

16. विश्व मानचित्र में सभी देशों को उनके कोटि अनुसार मानव विकास सूचकांक मान के साथ प्रदर्शित कीजिए।

पाठ 06
विश्व : मानव अधिवास
(World : Human Settlments)

मानव अधिवास का अभिप्राय

पृथ्वी के धरातल पर मानव द्वारा निर्मित एवं विकसित आवासों के संगठित समूह को अधिवास कहते हैं मानव अधिवास को मानव बस्ती भी कहा जाता है। मानव अधिवास साधारणतया स्थायी रूप से बसे होते हैं किन्तु कुछ अधिवास अस्थायी भी होते हैं। ये एकाकी एवं संकुल भी होते हैं।

अधिवासों का महत्त्वपूर्ण उपयोग मानव निवास के लिये होता है। मानव के अपने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि कार्यों को पूरा करने के लिए भी अधिवासों का उपयोग होता है।

आवास, मकान, धर या निवास स्थान अधिवास की मूलभूत इकाई होती है। जो एक झोंपड़ी या भव्य इमारत हो सकती है। अधिवास मकानों के समूह होते हैं जो पाँच से लेकर सैकड़ों व हजारों मकानों के समूह में हो सकते हैं। बस्तियाँ छोटे रूप में विकसित होकर नगरों, महानगरों, विराट नगरों, विश्व नगरों एवं मिलियन सिटी का रूप धारण कर सकती है। आवासों के परस्पर सम्पर्क के लिए पगडण्डी, गली, सड़क, नहर, परिवहन मार्ग आदि होते हैं।

प्रो. विडाल डी लॉ ब्लॉश के अनुसार ''मानव द्वारा स्वयं के आवास एवं अपनी सम्पत्ति को रखने के लिए निर्मित संरचना से है।

मानव अधिवासों की उत्पत्ति : मानव ने अपनी विकास यात्रा में जब एकत्रीकरण और आखेट की अवस्था को पार कर पशुपालन अवस्था के साथ ही कृषि कार्य करना प्रारम्भ कर दिया तो पशुओं की, स्वयं की सुरक्षा और अनाज भण्डारण के लिए उसे स्थायी आवास की आवश्यकता हुई। प्राचीनकाल में सभी मानव बस्तियों पशुचारकों और कृषकों पर ही आधारित थी। जनसंख्या बढ़ने और संघर्ष की स्थिति में सुरक्षा की दृष्टि से आवासों की संख्या में वृद्धि होने लगी। लोग अलग–अलग दूरियों पर घर बनाकर रहने लगे। धीरे–धीरे मानव ने विकास किया। उत्पादन में वृद्धि से व्यापार एवं परिवहन का विकास हुआ। तकनीकी विकास और जनसंख्या वृद्धि से गांवों की संख्या में वृद्धि हुई। पुराने गांवों के आकार बढ़ने से नगरों के विकास की परम्परा प्रारम्भ हुई। वर्तमान से 5000 वर्ष पूर्व मिश्र, सिन्धु, दजला–फरात की घाटियों में विशाल नगरों की उत्पत्ति एवं विकास हुआ।

मानव अधिवासों की उत्पत्ति मूलतः अपने निवास के लिये होती है। इस आधार पर अधिवासों की उत्पत्ति को दो भागों में बांटा जा सकता है।

(अ) अस्थायी अधिवास

(ब) स्थायी अधिवास

(अ) अस्थायी अधिवास : प्राचीन काल में मानव द्वारा कुछ अधिवास शिकार, मौसम की अनुकूलता, पशुचारण एवं सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से कुछ समय के लिये निर्मित किये जाते थे। आज के आधुनिक युग में भी नागा जैसे कई जनजातियों द्वारा स्थानान्तरण कृषि के लिये अस्थायी अधिवासों का निर्माण किया जाता है। मध्य एशिया के स्टेपी मैदान में खिरगीज जनजाति द्वारा पशुओं को चराने के लिए चारे की उपलब्धता तक तम्बुओं द्वारा अस्थायी अधिवास निर्मित किये जाते हैं। एस्किमों लोगों द्वारा मौसम की अनुकूलता के लिये ध्रुवीय क्षेत्रों के इग्लू (बर्फ के घर) को छोड़कर ग्रीष्मकाल में रेण्डियर और सील की खाल से अस्थायी आवास बनाये जाते है। इनके अतिरिक्त भी अनेक जनजातियाँ जैसे अरब व सहारा के बद्दू रॉकी पर्वत के पूर्वी भागों में रेड इण्डियन, अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में बुशमैन द्वारा बनाये गये आवास अस्थायी अधिवासों के प्रमुख उदाहरण है। राजस्थान

के मारवाड़ प्रदेश की रेबारी, गायरी जाति तथा बंजारे पशुचारण हेतु मूल स्थान को छोड़ कर प्रवास के दौरान अस्थायी आवास बनाते हैं। सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कार्यों को पूरा करने के लिए भी अस्थायी अधिवासों का उपयोग होता है।

(ii) **स्थायी अधिवास :** स्थायी अधिवासों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई? वास्तविक रूप में यह कहना कठिन है। किन्तु विद्वान उत्तर पाषाण काल में स्थायी कृषि के साथ ही स्थायी अधिवासों की उत्पत्ति मानते हैं। यह कहा जा सकता है कि मानव के विकास क्रम में जब से मानव समूह में रहने लगा, तभी से स्थायी अधिवासों का विकास हुआ होगा।

मानव अधिवास मानव की सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं। किसी मानव बस्ती का स्थायित्व निम्न बातों पर निर्भर करता है–

1. स्थानीय संचित संसाधन
2. बाह्य विश्व से सम्बन्ध
3. भावी उन्नति की संभावना
4. सुरक्षा
5. धार्मिक सांस्कृतिक और आर्थिक कारक।

मानव अधिवासों का निर्माण निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है–

1. भौतिक वातावरण की कठोरता को कम करने के लिये– यथा मौसमी परिस्थितियों से सुरक्षा हेतु।
2. खाद्य व उपयोगी सामग्री के भण्डारण हेतु।
3. जंगली जानवरों व पशुओं से सुरक्षा।
4. सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व शैक्षिक कार्यों के लिये।
5. पारिवारिक एवं विलासिता पूर्ण जीवन जीने के लिये।

मानव अधिवासों का वर्गीकरण

मानव अधिवासों को प्राकृतिक दशाओं और आधारभूत कार्यों के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है।

(1) ग्रामीण अधिवास

(2) नगरीय अधिवास

(1) ग्रामीण अधिवास (ग्रामीण बस्तियाँ)

ग्रामीण अधिवासों की अर्थव्यवस्था प्राथमिक व्यवसायों पर निर्भर होती है। जैसे कृषि, पशुपालन, लकड़ी काटना, मछली पकड़ना, खनन एवं वनों से प्राप्त पदार्थों का संग्रहण आदि। अतः ग्रामीण अधिवास मुख्यतः भूमि के विदोहन पर आधारित होते हैं।

ग्रामीण अधिवासों पर आधुनिकता का प्रभाव नगण्य होता है। इसलिये यहाँ सामाजिक संगठन सुदृढ़ एवं मानव मूल्यों में प्रगाढ़ता पायी जाती है। सामाजिक मूल्यों (हितों) को व्यक्तिगत मूल्यों से ऊपर रखा जाता है।

ग्रामीण अधिवास के प्रकार :

मकानों की संख्या और उनके बीच की दूरी के आधार पर किये गये विभाजन को अधिवासों का प्रकार कहा जाता है।

ग्रामीण अधिवासों के प्रकारों के लिये भौतिक लक्षण सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक (जाति–धर्म) और सुरक्षा आदि अनेक कारक उत्तरदायी है। सामान्यतः ग्रामीण अधिवासों के निम्नलिखित 4 प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं।

1. सघन या गुच्छित अधिवास
2. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास
3. मिश्रित अधिवास
4. पल्ली अधिवास

1. सघन या गुच्छित अधिवास

इन ग्रामीण अधिवासों को पुंजित, संहत, संकेन्द्रित, संकुलित आदि नामों से भी जाना जाता है। सघन ग्रामीण अधिवास उपजाऊ मैदानी भागों, समतल तथा पर्याप्त जल की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में विकसित होते हैं। जिनमें आवास गृह, पास–पास होते हैं और सम्पूर्ण गाँव सघन बसा होता है। आसान पहुँच के लिये इनके साथ सड़कों का निर्माण होता है। आवासों के साथ–साथ विद्यालय, सामाजिक व धार्मिक स्थल भी बने होते हैं।

विशेषताएँ–

(i) अधिवास प्रायः खेतों के मध्य किसी ऊँचे एवं बाढ़ से सुरक्षित स्थानों पर बसे होते हैं।

(ii) सभी आवास पास–पास बने होते हैं।

(iii) सभी आवास एक स्थान पर संकेन्द्रित होते हैं एवं बाहरी आक्रमणों का मिलकर मुकाबला करते हैं।

(iv) सामाजिक प्रगाढ़ता होने से एक–दूसरे के सुख– दुख में सहभागी होते हैं।

(v) इनमें आवासों की संख्सा 40–50 से लेकर सैंकड़ों तक हो सकती है।

(vi) इनकी जनसंख्या उपलब्ध संसाधनों के आधार पर 500 से 1000 या अधिक हो सकती है।

सघन अधिवासों का वितरण : इस प्रकार के अधिवास नदियों के उपजाऊ मैदानों में सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

भारत में सघन ग्रामीण अधिवास गंगा– सतलज के मैदान, मालवा के पठार, विन्ध्यन पठार, नर्मदा घाटी और राजस्थान के मैदानी भाग में पाये जाते हैं।

2. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास

ऐसे अधिवास छितरे और बिखरे होते हैं। इसलिये आवास एक–दूसरे से दूर और कृषि भूमि को छोड़कर बनाये जाते हैं।

विशेषताएँ

(i) आवास एक दूसरे से दूर होते हैं।

(ii) व्यक्ति एकाकी रूप में रहते हैं।

(iii) व्यक्ति स्वतंत्र जीवन–यापन के आदि होते हैं।

(iv) एक–दूसरे के सहयोग की भावना कम होती है।

(v) कृषि में संलग्न जातियों में ऊँच–नीच की भावना होती है।

वितरण : उत्तरी अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाड़ा के प्रेयरी प्रदेश, एशिया के स्टेपी मैदान, गंगा के खादर क्षेत्र, हिमालय पर्वतीय क्षेत्र व तराई तथा भाबर क्षेत्र, मध्य द. अमेरिका में अर्जेन्टाइना के पम्पाज, आस्ट्रेलिया के डाउन्स तथा दक्षिणी अफ्रीका में वेल्डस प्रदेश दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, राजसमन्द, डूँगरपुर, प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा जिलों में तथा मरूस्थली प्रदेश में प्रकीर्ण अधिवास प्रमुखता से पाये जाते हैं।

3. मिश्रित अधिवास

इन अधिवासों को अर्द्ध सघन या अर्द्ध केन्द्रीय अधिवास भी कहा जाता है। यह सघन व प्रकीर्ण अधिवासों के बीच की अवस्था होती है जो सामान्तया किसी परिवार की संख्या में वृद्धि होने से आवासों की संख्या बढ़ने के कारण उत्पन्न होते हैं। इनकी उत्पत्ति में पर्यावरणीय कारणों के स्थान पर पारिवारिक कारण उत्तरदायी होते हैं। जैसे– सांगोद (कोटा) तहसील का खुर्द गाँव।

4. पल्ली या पुराना अधिवास

इस प्रकार के अधिवासों में आवास एक दूसरे से अलग किन्तु एक ही बस्ती में बसे होते हैं। इसलिए उन सबका नाम एक रहता है। बस्ती के अलग–अलग भागों में अलग–अलग जातियों के लोग रहते हैं।

वितरण : पर्वतीय प्रदेशों की निचली घाटियों तथा खनन वाले क्षेत्रों में इस प्रकार के आवास दृष्टिगोचर होते हैं।

ग्रामीण अधिवासों के प्रतिरूप

अधिवासों के बसाव की आकृति के आधार पर किये गये विभाजन को अधिवासों के प्रतिरूप कहा जाता है। ग्रामीण अधिवासों के प्रतिरूपों को प्राकृतिक कारक (धरातल का स्वरूप, नदियाँ, जलाशय), ऐतिहासिक कारक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारक, परिवहन मार्ग एवं धार्मिक स्थल आदि निर्धारित करते हैं। आकृति के आधार पर ग्रामीण अधिवासों के निम्नलिखित प्रतिरूप निर्धारित किये जा सकते हैं (रेखाचित्र 6.1)।

1. रेखीय प्रतिरूप

जब ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क मार्ग, रेलमार्ग, नहर, नदी घाटी में या सागर तट के सहारे बस्ती का विकास होता है, तब रेखीय प्रतिरूप वाले अधिवास का निर्माण होता है। इस प्रतिरूप में आवास पास–पास एवं पंक्तिबद्ध होते हैं। जैसे गंगा–यमुना के मैदान एवं मध्य हिमालय क्षेत्र में इस प्रकार के अधिवास पाये जाते हैं। जयपुर जिले का बरवाड़ा गाँव रेखीय प्रतिरूप का उदाहरण है। इन्हें पंक्तिनुमा, मार्गोन्मुख और अर्द्धचन्द्राकार प्रतिरूप भी कहते हैं (चित्र 6.1)।

2. तीर प्रतिरूप

किसी अन्तरीप के शीर्ष पर नदी के विसर्प के सहारे या दो आब के बीच विकसित अधिवास का प्रतिरूप प्रायः तीर नुमा होता है। ऐसे स्थान पर अग्रभाग में अधिवास के विकास के लिए भूमि उपलब्ध नहीं होती है या नदी की सीमा इसके विकास में बाधा डालती है। जिससे अधिवास का विकास पृष्ठभाग की तरफ होता है। जैसे– दक्षिण भारत में कन्याकुमारी और उड़ीसा में चिल्का झील तट पर बने अधिवास आदि।

3. त्रिभुजाकार प्रतिरूप

जब नदियों, नहरों या सड़कों का संगम होता है और वे एक–दूसरे को काटती नहीं है, तब त्रिभुजाकार प्रतिरूप का निर्माण होता है। ऐसे संगम स्थलों पर अधिवास को विकसित होने के लिए दोनों नदियों, नहरों या सड़कों द्वारा निर्मित त्रिभुज के अन्दर की भूमि पर ही अधिवास विकसित होता है। भारत में हरियाणा और पंजाब में ऐसे अधिवास मिलते हैं।

4. आयताकार या चौक पट्टी प्रतिरूप

जब दो सड़कें आपस में मिलती हैं और उनके मिलन स्थल से दोनों सड़कों के किनारे लम्बवत् गलियों का निर्माण होता है, तब आयताकार प्रतिरूप बनते हैं। विश्व में समतल उपजाऊ मैदानी भागों में ऐसे प्रतिरूपों का विकास होता है।

5. अरीय त्रिज्या प्रतिरूप

जब किसी गाँव में एक स्थान पर अनेक दिशाओं से कच्ची सड़कें या पक्की सड़कें मिलती हैं तो मिलन स्थान से त्रिज्याकार मार्गों पर मकानों का निर्माण होता है, परन्तु सभी गलियाँ मुख्य चौराहों पर मिलने से समानान्तर नहीं होती है।

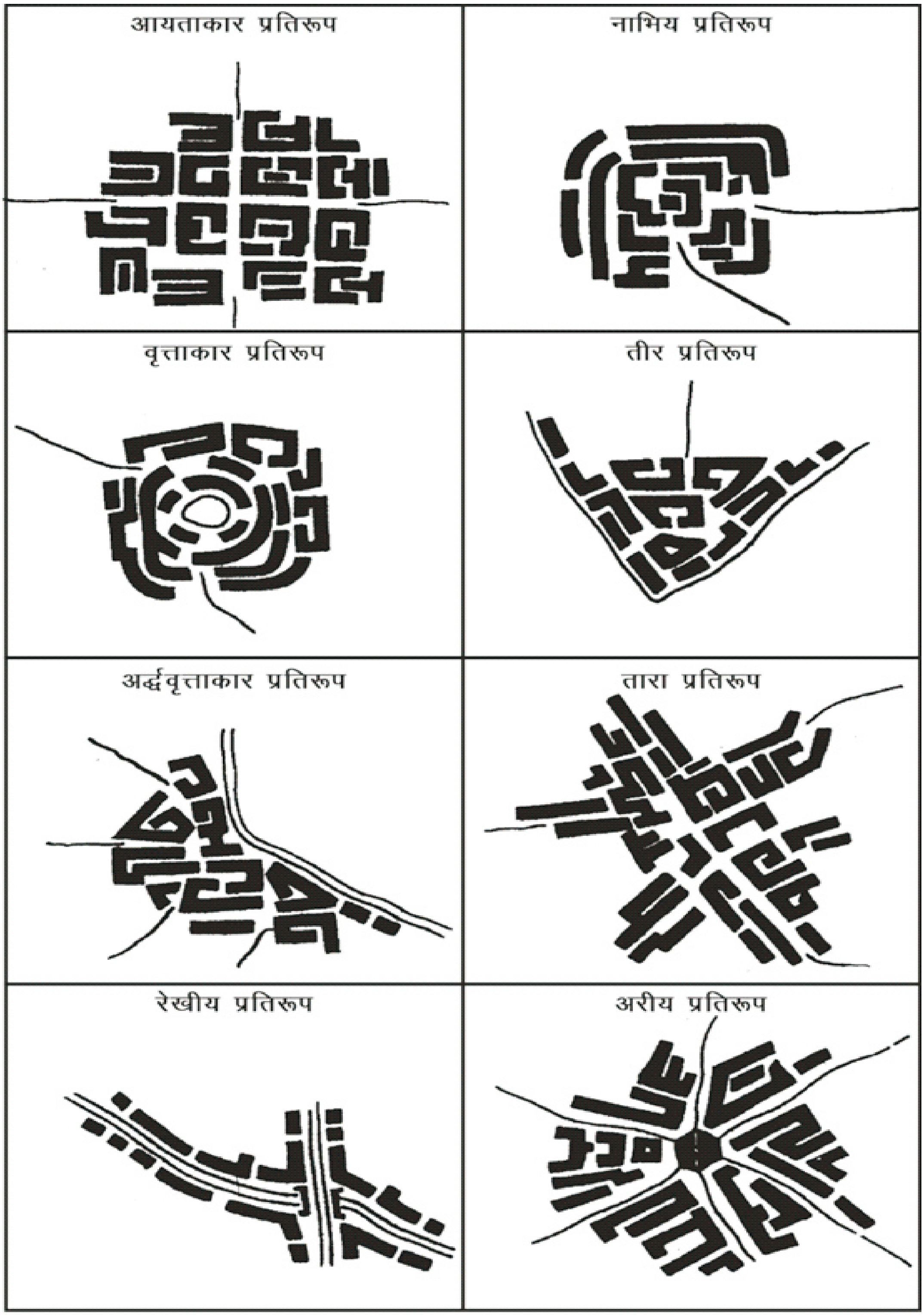

रेखाचित्र 6.1 : ग्रामीण अधिवासों के मुख्य प्रतिरूप

विश्व में घनी आबादी वाले उपजाऊ मैदानी भाग में ऐसे प्रतिरूप पाये जाते हैं। भारत में गंगा के ऊपरी मैदान एवं तमिलनाडु राज्य में इस प्रकार के प्रतिरूप दृष्टिगोचर होते हैं।

6. वृत्ताकार प्रतिरूप

प्रायः किसी झील, तालाब, कुएँ, किले, धार्मिक स्थल या चौपाल के चारों ओर मकानों के बसने से बस्ती का आकार वृत्ताकार हो जाता है। इसलिए इसे वृत्ताकार प्रतिरूप कहते हैं। नाभिक प्रतिरूप इसकी प्रारम्भिक अवस्था होती हैं।

चित्र 6.1 : रेखीय प्रतिरूप

चित्र 6.2 : जुलू जनजाति का मधुछत्ता प्रतिरूप गांव

7. तारा प्रतिरूप

तारा प्रतिरूप प्रारम्भ में अरीय प्रतिरूप के रूप में विकसित होता है किन्तु बाद में बाहर की ओर जाने वाली सड़कों के किनारे मकान बनने से इसकी आकृति तारे जैसी हो जाती है। इसलिये इसे तारा प्रतिरूप कहा जाता है।

8. पंखा प्रतिरूप

जब किसी गांव में केन्द्रीय स्थल के चारों और मकान बनते हैं। इसके बाद बस्ती का विकास सड़क के किनारे रेखीय प्रतिरूप में होने से पंखानुमा प्रतिरूप विकसित होता है।

9. अनियमित प्रतिरूप

मानव द्वारा अपनी सुविधानुसार बिना किसी योजना के मकानों का निर्माण होने से, आकार रहित अधिवास विकसित होता है, जिसे अनाकार प्रतिरूप कहते हैं। सड़कें तथा गलियाँ शेष भूमि पर बाद में विकसित होती है जो टेढ़ी–मेढ़ी, घुमावदार और प्रायः सकड़ी होती है। भारत में अधिकाँश गाँव इसी श्रेणी में आते हैं। राजस्थान के बाँरा जिले में लिसाड़ी गाँव अनाकार प्रतिरूप का उदाहरण है।

10. सीढ़ी नुमा प्रतिरूप

इस प्रकार के गाँव पर्वतीय ढालों पर होते हैं जिनमें मकान परस्पर सटे हुए, परन्तु दूर–दूर दोनों ही रूपों में मिलते हैं। इन मकानों की पंक्तियाँ ढाल के अनुसार कई स्तरों में दिखाई देती है। हिमालय, रॉकीज, एन्डीज और आल्पस पर्वतों में ग्रामीण बस्तियाँ इसी प्रतिरूप से बसी है।

11. मधु छत्ता प्रतिरूप

भारत में आदिवासी जनजातियों के गुम्बद नुमा झोपड़ियों के गाँव टोडा जनजाति, आन्ध्र प्रदेश के समुद्र तटीय मछुवारों के गाँव तथा दक्षिणी अफ्रीका के जुलू लोग इस प्रकार के प्रतिरूप में निवास करते हैं जो दूर से मधुमक्खी के छत्ते जैसा दिखाई देता है (चित्र 6.2)।

12. अन्य प्रतिरूप

अन्य प्रतिरूपों में टेड़ा–मेढ़ा प्रतिरूप मकड़ी प्रतिरूप प्रमुख है।

ग्रामीण अधिवासों की समस्याएँ

सामान्यतः ग्रामीण अधिवासों में निम्न समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है–

(i) आवागमन के साधनों का अभाव : ग्रामीण अधिवासों तक पहुँचने के लिए सार्वजनिक परिवहन साधनों का अभाव होता है। व्यक्तिगत साधन ही उपलब्ध होते हैं, इसलिए साधन रहित लोगों के सामने आवागमन एक गंभीर समस्या है।

(ii) स्वच्छ पेयजल का अभाव : वर्तमान में पेयजल की समस्या ग्रामीण अधिवासों में विकराल रूप धारण करती जा रही है, इससे यहाँ के निवासी कई बीमारियों के शिकार हो रहे हैं।

(iii) स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव : यहाँ के निवासियों को छोटी–छोटी स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए समीपवर्ती नगर में जाना पड़ता है। आवागमन के साधनों के अभाव में समय पर उपचार नहीं मिलने के कारण मरीज की मृत्यु तक हो जाती है।

(iv) विद्युत आपूर्ति का अभाव : ग्रामीण अधिवासों में नियमित एवं पर्याप्त विद्युत आपूर्ति का अभाव होता है, इससे दैनिक एवं कृषि कार्यों में बाधा उत्पन्न होती है।

(v) रोजगार के अवसर नहीं होना : यहाँ रोजगार के अवसर नहीं होने से तीनों प्रकार की बेरोजगारी (अ) पूर्ण बेरोजगारी, (ब) छिपी बेरोजगारी (स) मौसमी बेरोजगारी पाई जाती है। युवा शक्ति रोजगार की तलाश में नगरों की ओर पलायन कर कम मजदूरी के कारण नारकीय जीवन व्यतीत करते हैं।

(vi) सूचना तकनीक एवं दूरभाष सुविधाओं का अभाव : इनके कारण ग्रामीण अधिवास सूचना तकनीक एवं इन्टरनेट से नहीं जुड़ पाते जिससे छोटे–छोटे कार्यों के लिए समीपवर्ती कस्बा या नगर में जाना पड़ता है। इस प्रकार धन व समय का दुरूपयोग होता है।

(vii) उच्च एवं तकनीकी शिक्षा संस्थानों का अभाव : उच्च एवं तकनीकी शिक्षा उपलब्ध नहीं होने से अधिकाँश युवक–युवतियों को प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा के बाद अध्ययन कार्य बन्द करना पड़ जाता है।

(2) नगरीय अधिवास

नगरीय अधिवासों की अर्थ व्यवस्था, निर्माण उद्योग, परिवहन, व्यापार, वाणिज्य, संचार, शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, न्याय और अन्य सेवाओं पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में नगरीय अर्थ व्यवस्था द्वितीयक, तृतीयक, चतुर्थक और पंचम व्यवसायों पर निर्भर करती है। नगरीय अधिवासों की निम्न विशेषताएँ होती है–

(i) उच्च जनसंख्या घनत्व

(ii) त्वरित गतिशीलता

(iii) पक्की सड़कें एवं पक्के मकान

(iv) रोजगार की उपलब्धता

(v) यातायात के व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक साधन,

(vi) उच्च शिक्षा एवं गहन चिकित्सा सुविधा

(vii) 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या का गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न होना।

(viii) जटिल श्रम विभाजन

(ix) सामाजिक प्रगाढ़ता का अभाव

(x) तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक अन्तर

नगरीय बस्तियों का वर्गीकरण

विश्व में नगरीय क्षेत्र की परिभाषा एक देश से दूसरे देश में भिन्न है। नगरीय बस्तियों के वर्गीकरण के सामान्य आधार, जनसंख्या का आकार, मानव व्यवसाय, प्रशासनिक ढाँचा और आवश्यक दशाएँ हैं।

1. जनसंख्या का आकार

अधिकाँश देशों में नगरीय क्षेत्र को परिभाषित करने के लिए जनसंख्या आकार को प्रमुख माना है। विश्व के अलग–अलग देशों में नगरीय क्षेत्र की श्रेणी में आने के लिए जनसंख्या की न्यूनतम सीमा डेनमार्क, स्वीडन एवं फिनलैण्ड में 250, आईसलैण्ड में 300, कनाडा व वेनेजुएला में 1000, कोलम्बिया में 1500, पुर्तगाल एवं अर्जेन्टाइना में 2000, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं थाईलैण्ड में 2500, जापान में 3000 और भारत में 5000 व्यक्ति निर्धारित है। भारत में 5000 जनसंख्या के अतिरिक्त जनसंख्या घनत्व भी 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी होना चाहिए एवं प्राथमिक व्यवसाय में लगी जनसंख्या को भी देखा जाता है।

2. व्यावसायिक संरचना

नगरीय बस्ती के लिए जनसंख्या के आधार के अतिरिक्त इटली जैसे कुछ देशों में 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में संलग्न होना चाहिए। भारत में यह मापदण्ड 75 प्रतिशत है। यहाँ प्रमुख आर्थिक गतिविधियों को भी नगरीय बस्तियों के लिए मापदण्ड माना गया है।

3. प्रशासन : कुछ देशों में किसी बस्ती को नगरीय बस्ती में सम्मिलित करने के लिए प्रशासनिक ढाँचे को ही मापदण्ड माना जाता है। जैसे भारत में किसी नगर में नगर पालिका, छावनी बोर्ड और अधिसूचित नगरीय क्षेत्र समिति होने पर उसे नगरीय बस्ती माना जाता है। ब्राजील और बोलिविया में जनसंख्या के आकार के स्थान पर प्रशासकीय केन्द्र को नगरीय केन्द्र माना जाता है।

4. आवश्यक दशाएँ : विश्व में नगरीय केन्द्रों की गणना सम्पादित कार्यों के आधार पर की जाती है। जैसे अवकाश, पर्यटन स्थल की आवश्यक दशाएँ, औद्योगिक नगर, समुद्री पत्तन नगर, सेना नगरों से भिन्न होती है।

नगरीय अधिवासों के प्रकार

नगरीय अधिवास अपने आकार, उपलब्ध सुविधओं एवं सम्पादित किये जाने वाले कार्यों एवं जनसख्या के आधार कई नामों से जाने जाते हैं। जो निम्नानुसार है–

(i) नगर : एक लाख से अधिक किन्तु दस लाख से कम जनसंख्या वाले अधिवास नगर कहलाते है। इनमें 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न होती है। जैसे भारत में राजस्थान का बीकानेर नगर।

(ii) महानगर : दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों को महानगर कहा जाता है। ये औद्योगिक, व्यापारिक, प्रशासनिक एवं शैक्षिक गतिविधियों के केन्द्र होते हैं। जैसे भारत में जयपुर, जोधपुर और कोटा नगर। इन्हें मेट्रोसिटी भी कहते हैं।

(iii) सन्नगर : 1915 में पैट्रिक गिडिज ने इस शब्दावली का प्रयोग किया था। यह विशाल विकसित नगरीय क्षेत्र होते हैं, जो अलग–अलग नगरों या शहरों के आवास से मिलकर विशाल नगरीय क्षेत्र में बदल जात हैं। ग्रेटर लंदन, टोकियो, शिकागो आदि

इसके उदाहरण है। भारत में ग्वालियर, लश्कर–मुरार, दिल्ली–गुडगांव, दिल्ली–नोएडा, सन्नगर के उदाहरण है।

(iv) वृहत नगर : अंग्रेजी में इसे मेगालोपोलिस कहते हैं, जिसका अर्थ विशाल नगर होता है। इसका प्रयोग सन् 1857 में जीन गोटमेन ने किया था। ये अत्यन्त बड़े नगर होते हैं, जिनकी जनसंख्या 50 लाख से अधिक होती है। इन नगरों को विश्व नगरी भी कहते हैं। जैसे ग्रेटर लंदन, टोकियो, पेरिस, न्यूयार्क, मास्को, बिजिंग, कोलकात्ता, मुम्बई, दिल्ली, चैन्नई आदि।

नगरीय अधिवासों की समस्याएँ

(i) अत्यधिक जनसंख्या घनत्व एवं नगरों का बढ़ता आकार : कृषि क्षेत्रों में मशीनीकरण, शिक्षा का विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के कारण रोजगार की कमी होने से युवा शक्ति रोजगार की तलाश, नौकरियों के लिए नगरों में बसने लगी है। फलस्वरूप नगरों का आकार व जनसंख्या घनत्व तीव्र गति से बढ़ रहा है। नगरीय भूमि की अधिक कीमतें बढ़ने से लोगों को छोटे–छोटे आवासों में रहना पड़ रहा है। यातायात भार बढ़ने से सुबह एवं सायंकाल आवागमन बाधित होता है एवं दुर्घटनाओं का अनुपात बढ़ रहा है। अकेले भारत में ही 1981 में 9 महानगर थे। जिनकी संख्या वर्तमान में 53 हो गई है। 2005 में विश्व में 438 महानगरों के स्थान पर वर्तमान में इनकी संख्या 600 से भी अधिक है।

(ii) गन्दी बस्तियों का प्रादुर्भाव : नगरों में जनसंख्या तथा घनत्व में वृद्धि से आवासीय भवनों की कमी से गन्दी बस्तियों का प्रादुर्भाव होने लगा है। औद्योगिक और व्यापारिक महानगरों में तो एक छोटे से कमरे में पूरा परिवार रहता है। महानगरों के धीरे–धीरे गन्दी बस्तियों का आकार बढ़ता जा रहा है। ये बस्तियाँ प्रकाश, वायु, एवं स्वच्छ पेयजल की सुविधाओं से वंचित है। मुम्बई में लगभग 10 प्रतिशत लोग गन्दी बस्तियों में निवास करते हैं और 60 प्रतिशत लोग सड़कों पर रात गुजारते हैं।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण : नगरीयकरण के कारण नगरों में अनेक प्रकार की पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ रही है। उद्योगों की चिमनियों से निकलता काला जहरीला धुआँ और बाधित परिवहन के कारण वाहनों से निकलता धुआँ वायुमण्डल को प्रदूषित करता है जो मानव और पशुओं के साथ वनस्पति पर भी कुप्रभाव डालता है। प्रदूषित वायु से हृदय, श्वसन, नाड़ी तंत्र, मानसिक स्वास्थ्य तथा त्वचा सम्बन्धी रोगों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। टोकियों में तो वायु प्रदूषण इतना हो गया है कि व्यक्ति को बीच–बीच में कृत्रिम ऑक्सीजन गैस लेनी पड़ती है। भारत में दिल्ली, मुम्बई तथा कोलकाता में कुछ वर्षों में ही वायु प्रदूषण दो गुना हो गया है।

(vi) उपभोक्ता वस्तुओं का उच्च मूल्य : नगरों में दैनिक उपभोग की वस्तुओं जैसे दूध, घी, फल, सब्जी आदि समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से आती है। दूर क्षेत्रों से लाने मे परिवहन व्यय, दलाली और मुनाफा वसूली से ये पदार्थ महँगें होने से उच्च मूल्य पर उपलब्ध होते हैं।

(v) खाद्य पदार्थों में मिलावट : नगरों में व्यापारी अधिक लाभ कमाने के लिए खाद्य पदार्थों में मिलावट करते हैं। मिलावटी भोजन सामग्री नागरिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है और नागरिकों को अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

(vi) अपराधों का बढ़ता स्तर : ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में नगरों में आने वाली जनसंख्या में पुरूषों की संख्या अधिक होती है। जिससे नगरों में लिंगानुपात का सन्तुलन बिगड़ जाता है। परिणामस्वरूप अपहरण, दुष्कर्म, हत्या आदि घटनाएँ बढ़ जाती है। पर्याप्त मजदूरी नहीं मिलने या शीघ्र धनवान बनने के लालच में युवावर्ग समाजकण्टकों के चक्कर में आकर थोड़े से रूपयों की खातिर अपराध करने लगते हैं। अपहरण, जेब काटने, चोरी, बैंक लूटने और हत्या जैसी घटनाएँ समाचार पत्रों और दूर दर्शन के माध्यम से आये दिन सुनने को मिलती है। पुलिस और प्रशासन के लगातार चौकन्ना रहने पर भी अपराधों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

(vii) तीव्र सामाजिक–आर्थिक विषमता एवं सामाजिक असहयोग : नगरों में मकानों और संसाधनों की उपलब्धता में अन्तर होने से सामाजिक–आर्थिक विषमता दृष्टिगोचर होती है। व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होने के कारण सामाजिक सहयोग का अभाव पाया जाता है। महानगरों में एक तरफ गगनचुम्बी, विशाल, वातानुकुलित इमारतें दिखाई देती है, दूसरी तरफ फुटपाथ में खुले आसमान के नीचे जीवन का संघर्ष दिखाई देता है।

(viii) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की कमी : नगरों में जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण बढ़ने से नागरिक रोग ग्रसित हो जाते हैं। जनसंख्या के अनुपात में चिकित्सा और चिकित्सालयों की कमी होती है। निजि महँगी चिकित्सा सुविधा आम जनता की पहुँच से बाहर हो जाती है। इससे व्यक्तियों को समय पर पूरी चिकित्सा सुविधा नहीं मिलती।

नगरीय कच्ची (गन्दी) बस्तियों की समस्याएँ एवं समाधान

नगरीय कच्ची बस्तियाँ रेलमार्गों, सड़कों, नालों आदि के सहारे विकसित अभावग्रस्त अस्थाई या स्थाई छत से बनी झोपड़ पट्टियाँ होती है जिनमें सड़को के नाम पर 2 से 4 फुट चोड़ी घुमावदार उबड़–खाबड़ गलियाँ होती है। ये बस्तियाँ न्यूनतम या अवांछित आवासीय क्षेत्र होते हैं, जहाँ जीर्ण–शीर्ण मकान, खुली

हवा, प्रकाश, पेयजल तथा स्वास्थ्य की निम्न सुविधाओं और शौच सुविधाओं जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव पाया जाता है। यह क्षेत्र बहुत ही भीड़–भाड़, पतली, सँकड़ी व घुमावदार गलियों और आग जैसे गंभीर खतरों की जोखिम से युक्त होती है। यहाँ के निवासी कम वेतन और जोखिम पूर्ण कार्य करने को विवश होते हैं। अल्प पोषण से निवासियों में विभिन्न रोगों और बीमारियों की संभावना लगातार बनी रहती है। ये लोग अपने बच्चों के लिए उचित शिक्षा का खर्च भी वहन नहीं कर सकते हैं। गरीबी इन्हें शराब, अपराध, पलायन, गुण्डागर्दी, नशीली दवाओं के सेवन और सामाजिक बहिष्कार की तरफ अग्रसर करती है। नगरों, महानगरों में बसे ऐसे स्थानों को स्लम या गन्दी बस्तियाँ कहा जाता है।

कच्ची बस्तियों में वे लोग निवास करते हैं जो विवशता में रोजगार की तलाश में नगरीय क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। धनाभाव में पर्यावरण की दृष्टि से अनुपयुक्त और निम्नीकृत क्षेत्रों पर कब्जा कर बस्तियाँ बसा लेते हैं। इनमें एक कमरे में पूरा परिवार निवास करता है। कच्ची बस्तियों की निम्नलिखित समस्याएँ उभर कर आती है–

- अस्वास्थ्य पूर्ण पर्यावरण में आवासों का निर्माण।
- सड़कों का अभाव।
- पेयजल, प्रकाश व शुद्ध वायु की कमी।
- अत्यधिक भीड़–भाड़ से संक्रमण का खतरा।
- कच्चे मकान होने से आग लग जाने का खतरा।
- शौचालय जैसी मूलभूत सुविधा का अभाव।
- शिक्षा हेतु विद्यालयों का अभाव।
- कम मजदूरी में जोखिम पूर्ण कार्य करने से असुरक्षित जीवन।
- अल्प पोषण से विभिन्न रोगों का खतरा।
- छोटे, कम ऊँचे एवं असुरक्षित आवास।
- समाज द्वारा हेय दृष्टि से देखना।
- कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने की समस्या।

कच्ची बस्तियों की समस्याओं हेतु समाधान

(i) सरकार द्वारा निम्नतम दर पर आवास उपलब्ध कराना : कच्ची बस्ती के स्थान पर ही बहुमँजिले आवासों में ऐसे लोगों का बसाने से वायु, प्रकाश, शौचालय की सुविधा स्वतः ही पूरी हो जाएगी। स्वास्थ्यप्रद वातावरण में जीवन प्रत्याशा भी अधिक बढ़ जाएगी। कोटा और अहमदाबाद की तर्ज पर कच्ची बस्तियों के लोगों को निम्नतम दर पर आसान किश्तों में परिवार के आकार के अनुसार आवास उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

(ii) नल या टेंकरों द्वारा स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति न्यूनतम दर पर या निःशुल्क की जानी चाहिए।

(iii) ग्रामीण क्षेत्रों के महानरेगा की तरह न्यूनतम मजदूरी पर निर्धारित कर रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

(iv) कच्ची बस्ती में ही विद्यालय खोलकर बच्चों की शिक्षा हेतु समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

(v) कच्ची बस्तियों के पास सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलकर निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

(vi) ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए जिससे नगरीय क्षेत्रों में प्रवास कम से कम हो।

(vii) चौड़ी सड़कों का निर्माण करना।

(viii) भूमि की उपलब्धता होने पर बगीचों की व्यवस्था करना।

(ix) स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध करवाना।

(x) परिवार कल्याण कार्यक्रम अपनाने पर जोर देना आदि।

(xi) कानून एवं व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाये रखना।

मुम्बई की धारावी बस्ती का विशेष अध्ययन

मुम्बई की धारावी कच्ची बस्ती (स्लम) एशिया की विशालतम कच्ची बस्ती है। विश्व के अन्य देशों की कच्ची बस्तियों की तरह यहाँ का जनजीवन भी घोर नारकीय है।

धारावी कच्ची बस्ती का परिदृश्य निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता है।

(i) धारावी बस्ती की स्थापना : 18वीं शताब्दी में यहाँ एक द्वीप था। 70 वर्ष पूर्व गुजरात के कुम्हारों ने इसे बसाया था। उनकी संख्या लगभग 10,000 थी।

(ii) अवस्थिति एवं विस्तार : यह कच्ची बस्ती मुम्बई शहर में जूहू से 12 किमी द.प. में उपनगरीय रेलमार्गों के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 557 एकड़ है जो 12 बस्तियों से मिलकर बनी है।

(iii) जनसंख्या : वर्ष 2011 के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 6,00,000 है जो 100,000 घरों में निवास करती है। एक घर में 10 से 15 व्यक्ति तक एक ही कमरे में निवास करते हैं। यहाँ के लगभग 60 प्रतिशत परिवार 60 वर्षों से रह रहे हैं।

चित्र 6.3 : धारावी कच्ची बस्ती विंहगम दृश्य

चित्र 6.4 : धारावी में आर्थिक गतिविधियाँ

चित्र 6.5 : धारावी में प्रदूषण का स्वरूप

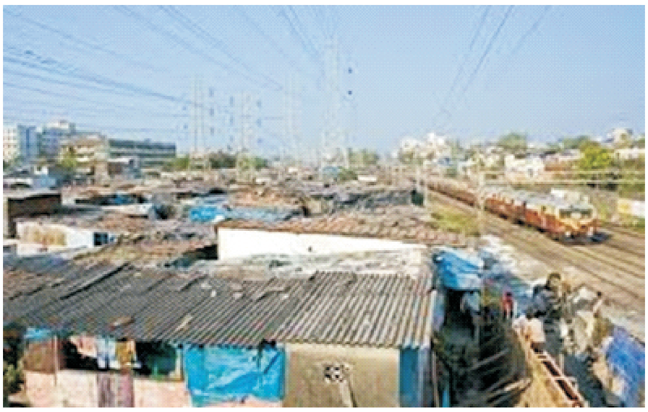

चित्र 6.6 : रेलमार्गों के मध्य धारावी

(iv) परिवहन : इस गन्दी बस्ती से केवल एक मुख्य सड़क गुजरती है जो नाइन्टीफुट रोड़ के नाम से जानी जाती है। जिसकी चौड़ाई घटते–घटते आधे से भी कम रह गयी है। यहाँ परिवहन निगम की बसें बस्ती की परिधि के बाहर से गुजरती है। ऑटो रिक्शा भी बस्ती के अन्दर नहीं आ सकता है। धारावी बस्ती केन्द्रीय मुम्बई में एक ऐसा भाग है, जहाँ तिपहिया वाहनों का प्रवेश भी निषेध है। कुछ गलियाँ एवं पगडण्डियां इतनी सँकड़ी है कि वहाँ से एक साईकिल का निकलना भी मुश्किल लगता है।

(v) भवन या आवास : सम्पूर्ण बस्ती में अस्थाई निर्माण के भवन है जो दो से तीन मंजिलें बने हैं तथा जंग लगी लोहे की सीढ़ियाँ लगी है। यहाँ एक कमरे को किराये पर लेकर 10–15 व्यक्ति तक भी रहते हैं। आवास अलग–अलग ऊँचाई तथा अलग–अलग रंग में पुते हैं।

(vi) आधारभूत सुविधाएँ : शुद्ध पेयजल, वायु एवं प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। यहाँ लगभग 1500 व्यक्तियों के लिए एक शौचालय है। गन्दे जल की निकासी की व्यवस्था नहीं होने से ठहरे गन्दे पानी के गड्डे भरे रहते हैं अतः आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। जगह–जगह काले कौओं और लम्बे भूरे चूहों की बहुतायात है।

(vii) व्यवसाय एवं रोजगार : जगह–जगह मिट्टी के उत्पाद, पकाने और ईंटों के भट्टे हैं। प्लास्टिक पुनर्चक्रण में सौन्दर्य प्रसाधनों से लेकर कम्प्यूटर के बोर्ड आदि प्रत्येक वस्तु का पुनःर्चक्रण होता है। जहाँ ग्रेट ब्रिटेन (U.K.) में 23 प्रतिशत कचरे का पुनःर्चक्रण होता है वहीं मुम्बई में 80 प्रतिशत कचरे का पुनःर्चक्रण धारावी में होता है, जिससे काला जहरीला धुआँ फैला रहता है। सँकड़ी गन्दी गलियों वाली बस्ती में मछुवारों की बहुलता है जो मछली पकड़ने का कार्य करते हैं। कई उपयोगी कार्यों में बस्ती की ख्याति है।

धारावी में मिट्टी के बर्तन, मृत्तिका शिल्प (सेरेमिक्स), कसीदाकारी, जरी का काम, परिष्कृत चमड़े का काम, धातु का कार्य, उत्कृष्ट आभूषण, फर्नीचर, उच्च फैशन के कपड़े सिलने आदि का कार्य होता है। यह बड़ा पर्यटन केन्द्र तथा फिल्मों के कनिष्ठ कलाकारों का बड़ा केन्द्र भी है। 85 प्रतिशत लोग स्वयं या स्लम में रोजगार पाते हैं।

(viii) व्यापार : यहाँ बनी वस्तुएँ मुम्बई के अतिरिक्त देश के अन्य भागों के साथ–साथ अरब देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय देशों में निर्यात होती है। एक अध्ययन के अनुसार एक वर्ष में यहाँ 650 मिलियन (U.S.) डॉलर का व्यवसाय होता है।

(ix) जनजीवन : प्रदूषित पर्यावरण एवं मूलभूत सुविधाओं के अभाव में प्रतिदिन चिकित्सकों के पास डिप्थीरिया (गलघोंटू) और टाइफाईड (आन्त्रज्वर) से ग्रसित 4000 बच्चे उपचार के लिए आते हैं। धारावी बस्ती में डेंगू, हैजा और पीलिया रोगी आसानी से देखने को मिलते हैं। जमीन का मालिकाना हक नहीं होने से धारावी आज भी कानूनन अवैध कच्ची बस्ती मानी जाती है।

धारावी कच्ची बस्ती की भावी योजनाएँ

प्रसिद्ध व्यवसायी श्री मुकेश मेहता 2 विलियन डॉलर की लागत से धारावी के पुनर्निर्माण की योजना बनाकर बहुमँजिले भवन बनाकर नये सिरे से यहाँ से निवासियों को बसाना चाहते हैं। यह बस्ती मुम्बई के केन्द्र में होने से भूमि की कीमतें इतनी अधिक है कि पुन निर्माण की योजना बेईमानी अधिक लगती है। इनके द्वारा सन् 2000 तक बसे लोगों को बसाने की योजना है।

महाराष्ट्र सरकार भी इस बस्ती को पुनर्स्थापित करने की योजना बना रही है। जिससे यहाँ के नागरिकों को स्वास्थ्यप्रद वातावरण के साथ–साथ, स्वच्छ पेयजल, प्रकाश, शुद्ध वायु, शौचालय जैसी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके और व्यक्तियों को गरीबी, भूख, बेरोजगारी और बीमारियों से बचाकर भावी–पीढ़ी को उचित शिक्षा प्रदान की जा सके।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- भोजन, वस्त्र और आवास मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ है।
- पृथ्वी के धरातल पर मानव द्वारा निर्मित एवं विकसित आवासों के संगठित समूह को अधिवास या बस्ती कहते हैं।
- मानव अधिवास निवास के आधार अस्थायी एवं स्थायी दो प्रकार के होते हैं।
- आधारभूत कार्यों एवं प्राकृतिक दशाओं के आधार पर मानव अधिवास दो प्रकार के होते हैं– ग्रामीण अधिवास, नगरीय अधिवास।
- मकानों की संख्या एवं उनके बीच की दूरी के आधार पर किये गये विभाजन को अधिवासों का प्रकार कहते हैं।
- अधिवासों के बसाव की आकृति के आधार पर किये गये विभाजन को अधिवासों के प्रतिरूप कहते हैं।
- ग्रामीण अधिवासों की अर्थव्यवस्था प्राथमिक व्यवसायों पर निर्भर होती है।
- नगरीय अधिवासों की अर्थव्यवस्था गैर प्राथमिक व्यवसायों पर निर्भर होती है।
- मकानों की संख्या एवं उनके बीच की दूरी के आधार पर ग्रामीण अधिवासों के 4 प्रकार है– (i) सघन या गुच्छित, (ii) प्रकीर्ण या एकाकी, (iii) मिश्रित, (iv) पल्ली अधिवास।
- अधिवासों की आकृति के आधार 10 प्रतिरूप निर्धारित किये जा सकते हैं (i) रेखीय प्रतिरूप, (ii) तीर प्रतिरूप, (iii) त्रिभुजाकार प्रतिरूप, (iv) आयताकार प्रतिरूप, (v) अरीय या त्रिज्या, (vi) वृत्ताकार प्रतिरूप, (vii) तारा प्रतिरूप, (viii) पंखा प्रतिरूप, (ix) अनाकार प्रतिरूप, (x) अन्य प्रतिरूप।
- नगरों के प्रकार (i) नगर, (ii) महानगर, (iii) सन्न नगर, (iv) वृहत् नगर।
- नगरीय कच्ची बस्तियाँ रेलमार्गों, नालों आदि के सहारे विकसित अभावग्रस्त अस्थाई या स्थाई छत से बनी झोपड़–पटि्टयाँ होती है। इन्हें गन्दी बस्ती भी कहते हैं।
- मुम्बई की धारावी कच्ची एशिया की विशालतम कच्ची बस्ती है।
- कच्ची बस्तियों में लोगों का जीवन घोर नारकीय होता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक

1. मानव अधिवास के अनेक रूप है, निम्न में से आप किसे मानव अधिवास नहीं मानते हैं?

   (अ) मकान (ब) नगर
   (स) गाँव (द) गलियाँ

2. बुशमैन जाति के लोग निम्न में से किस प्रकार के अधिवास बनाते हैं?

   (अ) अस्थायी अधिवास (ब) पुंज्जित अधिवास
   (स) स्थायी अधिवास (द) कृषि गृह

3. पम्पास व प्रेयरी घास के प्रदेशों में किस प्रकार के अधिवास बनाते हैं?

   (अ) मिश्रित अधिवास (ब) गुच्छित अधिवास
   (स) प्रकीर्ण अधिवास (द) सघन अधिवास

4. ग्रामीण क्षेत्रों में रेलमार्गों के सहारे बस्ती का विकास किस अधिवास प्रतिरूप में हैं?

   (अ) तीर प्रतिरूप (ब) रेखीय प्रतिरूप
   (स) वृत्ताकार प्रतिरूप (द) चौक पट्टी प्रतिरूप

5. भारत में महानगर की जनसंख्या का आकार है?

(अ) 5 लाख से अधिक

(ब) 10 लाख से अधिक

(स) 1 लाख से अधिक

(द) एक करोड़ से अधिक

6. भारत में मेगापोलिस नगर श्रेणी में शामिल नहीं है?

(अ) कोलकत्ता (ब) दिल्ली

(स) जयपुर (द) चेन्नई

7. एशिया की सबसे विशाल स्लम कच्ची बस्ती किस शहर में स्थित है?

(अ) दिल्ली (ब) मुम्बई

(स) कराची (द) बीजिंग

8. भारत में 2011 के अनुसार महानगरों की संख्या है?

(अ) 53 (ब) 27

(स) 35 (द) 47

अतिलघूत्तरात्मक

9. मानव निवास की मूलभूत इकाई क्या है?

10. मानव अधिवासों के निवास के आधार पर प्रकार बताईये।

11. मानव अधिवास का महत्वपूर्ण उपयोग किस कार्य के लिए होता है।

12. प्रकीर्ण अधिवास की प्रमुख विशेषता कौनसी है।

13. मानव अधिवासों के किन्हीं दो प्रतिरूपों के नाम बताइये।

लघूत्तरात्मक

14. मानव अधिवास से क्या तात्पर्य है?

15. ग्रामीण अधिवास किसे कहते हैं?

16. ग्रामीण अधिवासों की कोई 5 समस्याएँ बताइए।

17. नगरीय अधिवासों की 5 प्रमुख समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

18. ग्रामीण व नगरीय अधिवासों में अन्तर कीजिए।

निबन्धात्मक

19. मानव अधिवास का अर्थ स्पष्ट करते हुए इनके प्रतिरूपों का वर्णन कीजिए।

20. ग्रामीण अधिवासों पर एक लेख लिखिए।

21. नगरीय अधिवासों के वर्गीकरण के आधारों का उल्लेख करते हुए इनके प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

22. मानव अधिवासों के प्रकार व प्रतिरूप में अन्तर स्पष्ट कीजिए साथ ही ग्रामीण अधिवासों के प्रकारों का भी वर्णन कीजिए।

पाठ 07
मानव व्यवसाय : प्रमुख प्रकार
(Human Occupations : Major Types)

मनुष्य मानव भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दू है। वह एक क्रियाशील प्राणी है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करता है। मनुष्य की जिन क्रियाओं से आर्थिक वृद्धि होती है, उन्हें आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं पर भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। विश्व के विभिन्न प्रदेशों में भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण की परिस्थितियाँ भिन्न होने के कारण मनुष्य की आर्थिक क्रियाएँ भी भिन्न –भिन्न होती है। उदाहरणतः मनुष्य वनों में एकत्रीकरण, आखेट व लकड़ी काटने का कार्य करता है, घास के मैदानों में पशुचारण कार्य करता है, उपजाऊ मैदानी भागों में कृषि कार्य करता है, जल में मछली पकड़ता है और खानों से खनिज निकालता है। इसके अलावा वह अनुकूल परिस्थितियों में वस्तु विनिर्माण उधोग, परिवहन या व्यापार जैसी आर्थिक क्रियाओं में व्यस्त है। जीवन–यापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं।

मानव व्यवसायों का विकास एवं बदलती प्रकृति

आदिम मानव अपनी उदरपूर्ति जंगली जानवरों के शिकार एवं वनोत्पादों से करता था। मानव घुमक्कड़ था। भोजन प्राप्ति में हमेशा अनिश्चितता बनी रहती थी। धीरे–धीरे मानव के बौद्धिक विकास के कारण वह उपयोगी जानवरों को पालने लगा। मानव समूह बनाकर पशुपालन करने लगा। पशु की चारे की पूर्ति के लिए वह ऋतु–प्रवास करने लगा। मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति पशु उत्पादों से होने लगी। कृषि ने मानव को स्थायीकरण के लिए प्रेरित किया। मानव एक जगह बस्तियाँ बनाकर रहने लगा। वह उपजाऊ नदी मैदानों में कृषि कार्य करने लगा। प्राचीन सभ्यताओं का विकास इन्हीं नदी घाटियों में हुआ। भारत की सिन्धु घाटी सभ्यता, चीन की हवांग्हो नदी घाटी सभ्यता, मिस्र की नील नदी घाटी सभ्यता व दजला–फरात नदियों के बीच पनपी मेसोपोटामिया सभ्यता कृषि–क्रियाओं के विकास के साथ ही पनपी।

पुर्नजागरण काल में खोज, अन्वेषण व तकनीकी विकास के साथ ही आर्थिक विकास ने गति पकड़ी। 18 वीं सदी में जीवाश्म ईंधन की खोज के बाद विश्व में खनन व उधोग जैसी आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ। व्यापार व वाणिज्य का विकास हुआ। नगरीकरण बढ़ा जिससे सेवा कार्यों में भी लोग आने लगे। इस प्रकार हम देखते है कि मानव के व्यवसायों के विकास का एक क्रम पाया जाता है। इस विकास क्रम को काल के अनुसार निम्न प्रकार से बाँटा जा सकता है।

(अ) प्रागैतिहासिक काल

इस काल मे मानव जंगली जानवरों का शिकार करता था तथा जंगलो से कंद–मूल, फल संग्रहण करता था। इस काल मे सीमित जनसंख्या व सीमित आवश्यकताएं थी। मानव जंगली अवस्था में ही रहता था। शिकार नुकीले पत्थरों व लकड़ी के डण्डों से करता था। इस काल मे शिकार में कुत्ता मानव का सहायक बना।

धीरे–धीरे मानव उपयोगी जानवरों को पालतू बनाकर पालने

लगा। जानवरों से मानव को दूध, दही, माँस, चमड़ा, हड्डियाँ आदि उपयोगी चीज़ें मिलने लगी। पशुओं के चारे की कमी की पूर्ति हेतु घुमक्कड़ जीवन जीता रहा। अस्थायी आवास (तम्बू) बनाकर छोटे–छोटे समूहों मे रहने लगा। उपयोगी पौधों के बीजों को बोकर उसने खेती करना प्रारम्भ किया। वह झुमिंग कृषि करने लगा। फसलों व पालतु जानवरों की देखभाल व सुरक्षा के लिए टहनियों, पत्तियों व जानवरों की खालों की झोपड़ियाँ बनाकर रहने लगा। नवपाषाण काल मे मनुष्य ने पहिये का आविष्कार किया। इस काल तक मानव ने मिट्टी से बर्तन बनाने की कला सीख ली थी।

(ब) प्राचीन काल

इस काल मे कृषि व पशुपालन जैसी आर्थिक क्रियाओं के विकास के साथ मानव के जीवन में स्थायित्व आया। उसकी प्राथमिक आवश्यकताओं की सुगमता से पूर्ति होने लगी। शेष बचे समय में वह अन्य कलाओं का विकास करने लगा। लोहा, ताँबा, व काँसा जैसे मजबूत धातुओं की खोज की, जिससे वह उपयोगी हथियार व सामान बनाने लगा। हल व बैलों की मदद से कृषि करने लगा। फसलों को सिंचाई के रूप में पानी देना सीख लिया। इसी काल मे ईसा से लगभग 2500 वर्ष पूर्व मोहनजोदड़ो व हड़प्पा सभ्यता सिंधु नदी घाटी में विकसित हुयी। नगर नियोजन व भवन निर्माण की उत्कृष्ट कला का उदाहरण इस सभ्यता की खुदाई में देखने को मिला है। मिस्र के पिरामिड उस काल की तकनीकी उन्नति के सूचक है। इस काल में कृषि के साथ–साथ कुटीर उधोगों का भी तेजी से विकास हुआ। विभिन्न तैयार सामानों का आपसी व्यापार इस काल मे प्रारम्भ हो गया था। यूनानी व रोमन सभ्यताओं मे नगरीय सभ्यताएँ पनपी।

(स) मध्यकाल

600 ईस्वी से 1500 ईस्वी के बीच की अवधि को मध्यकाल के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। यूरोप में इस काल में मानव व्यवसायों में विविधता बढ़ी। इस काल में जागीरदारी व सामंतवादी प्रथा का प्रचलन था। कृषि का भी उत्तरोतर विकास होता गया। बढ़ती शिक्षा, व्यापार तथा सांस्कृतिक विकास के कारण बड़े–बड़े नगरों का विकास हुआ। व्यापार में वस्तुओं का विनिमय होता था। ग्रामीण क्षेत्रों से कृषि उत्पाद नगरों में एवं नगरों से निर्मित माल ग्रामीण क्षेत्रों में आता था। यूरोप में धार्मिक विचारों के प्रभुत्त्व व वैचारिक स्वतंत्रता के दमन के कारण तकनीकी विकास अधिक नहीं हो सका। इसी काल में भारत में व्यावसायिक, कृषि, कुटिर उद्योग एवं व्यापार का सर्वाधिक विकास हुआ। भारत इस दृष्टि से विश्व का प्रतिनिधित्व करता था।

(द) आधुनिक काल

15वीं सदी से वर्तमान समय तक की अवधि को आधुनिक काल माना जाता है। इस काल में मनुष्य के व्यवसाय अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच गये। तकनीकी विकास, खोज व आविष्कारों के कारण आधुनिक विकसित मानव व्यवसायों का उदय हुआ। इस काल मे मानव प्राथमिक व्यवसायों की तुलना में द्वितीयक, तृतीयक,चतुर्थक व पंचम व्यवसायों से जुड़ने लगा। इसी युग मे औद्योगिक क्रांति आयी जिसके कारण अधिकतर आर्थिक क्रियाऍ स्वचालित मशीनों के द्वारा संचालित होने लगी। 19वीं शताब्दी से कृषि मे उन्नत बीजों, रसायनों, कीटनाशक दवाओं व उन्नत मशीनों का उपयोग होने लगा। पशुपालन व मत्स्य व्यवसाय विस्तृत व वाणिज्यक स्तर पर स्वचालित मशीनों द्वारा किया जाने लगा। औद्योगिक क्रियाओं के लिए वृहत् स्तर पर विभिन्न खनिजों जैसे लौह अयस्क, ताँबा, जस्ता व सीसा आदि का खनन वैज्ञानिक रीति से होने लगा। ऊर्जा के विभिन्न साधनों से ऊर्जा की प्राप्ति के कारण वृहत् स्तर पर उद्योगों में विभिन्न वस्तुओं का निर्माण होने लगा। विकास के उच्च स्तर पर पहुँचे विकसित देशों के लोग चतुर्थक व पंचम व्यवसायों से अधिक जुड़े हैं।

मानव व्यवसायों का वर्गीकरण

मानव की जीविका उपार्जन की विधियों और आर्थिक क्रियाओं को वर्तमान में पाँच वर्गो में बाँटा जाता है। यह विभाजन पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों से सतत दूरी बढ़ने के आधार पर किया गया है।

(1) प्राथमिक व्यवसाय : आखेट, संग्रहण, कृषि, पशुपालन, खनन आदि।

(2) द्वितीयक व्यवसाय : विनिर्माण, निर्माण, ऊर्जा–उत्पादन, प्रसंस्करण व अन्य निर्माण।

(3) तृतीयक व्यवसाय : परिवहन, व्यापार, संचार, प्रशासन, मनोरंजन, बैंक, बीमा, पर्यटन।

(4) चतुर्थक व्यवसाय : सूचना, शोध, प्रबन्धन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा।

(5) पंचम व्यवसाय : कार्यकारी निर्माणकर्त्ता, अनुसंधान, सरकार, कानूनी व तकनीकी सलाहकार।

किसी भी अर्थव्यवस्था में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न लोगों का ऐतिहासिक विकास क्रमिक चरणों में होता है। स्पष्ट है कि प्राचीन काल में लोग मुख्यतः प्राथमिक व्यवसायों से जुड़े थे। औद्योगिक क्रान्ति के समय द्वितीयक व्यवसायों में तथा वर्तमान में

तृतीयक, चतुर्थक व पंचम व्यवसायों की और लोगों का रूझान बढ़ा है।

1. प्राथमिक व्यवसाय

जिन व्यवसायों में मनुष्य प्रकृति प्रदत्त संसाधनों भूमि, जल, वनस्पति एवं खनिज पदार्थों आदि का सीधा उपयोग करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, उन्हें प्राथमिक व्यवसाय कहते है। इनका सीधा सम्बन्ध प्राकृतिक वातावरण की दशाओं से होता है। इन व्यवसायों में भोजन व कच्चे माल का उत्पादन होता है।

अधिकांश प्राथमिक व्यवसाय सरल, परम्परागत और आदिवासी आर्थिक व सामाजिक संरचना के प्रतीक है। विश्व में प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं में संलग्न व्यक्तियों का वितरण असमान है। विकसित देशों मे 5 प्रतिशत से भी कम श्रमिक प्राथमिक क्रियाओं में लगे हुये है। जबकि विकासशील देशों में ये क्रियाएँ श्रम के बहुत बड़े भाग को रोजगार प्रदान करती है। अपवाद स्वरूप कनाडा दो प्राथमिक व्यवसायों लकड़ी काटना व पेट्रोलियम खनन के आधार पर विकसित देशों की कतार में खड़ा है। प्राथमिक क्रियाएँ बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि ये मानव जाति के लिए भोजन और उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती है। इन व्यवसायों ने मानव जाति का उसके अस्तित्त्व के लिए 95 प्रतिशत से अधिक समय तक पोषण किया है।

प्राथमिक व्यवसायों में निम्न व्यवसाय सम्मिलित होते हैं– (i) आखेट या शिकार, (ii) भोजन व वनोत्पाद एकत्रीकरण, (iii) लकड़ी काटना, (iv) मछली पकड़ना, (v) पशुपालन, (vi) कृषि, (vii) खनन आदि।

संसार में भूमि उपयोग की भिन्नता की दृष्टि से प्राथमिक व्यवसायों के प्रमुख प्रदेश निम्नलिखित हैं–

(i) उष्ण कटिबंधीय प्रदेश

(अ) विषुवतरेखीय आर्द्रवन (अमेजन–काँगो प्रकार)

(ब) उष्ण कटिबंधीय आर्द्र कृषि प्रदेश (पूर्वी भारत, पूर्वी ब्राजील)

(स) आर्द्र– शुष्क निम्न अंक्षाशीय सवाना (सूडान, भारत, ब्राजील)

(द) उष्ण कटिबंधीय उच्च प्रदेश (इथोपिया प्रकार)

(य) मरूस्थल (सहारा, अरब, थार, मध्य एशिया, मंगोलिया, पश्चिमी आस्ट्रेलिया, कालाहारी)

(ii) समशीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेश

(अ) सम–शीतोष्ण घास के मैदान (प्रेयरी व स्टैपी प्रकार)

(ब) भूमध्यसागरीय तुल्य प्रदेश

(स) उत्तरी चीन तुल्य प्रदेश

(द) समुद्री चक्रवातीय प्रदेश (प. यूरोप प्रकार)

(य) महाद्वीपीय चक्रवातीय प्रदेश (उत्तरी–पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका प्रकार)

(र) शीतल महाद्वीपीय प्रदेश (पूर्वी यूरोप प्रकार)

(iii) शीत प्रदेश

(अ) शीतल वन (टैगा, साइबेरिया, कनाडा प्रकार)

(ब) टूण्ड्रा प्रदेश

(स) ऊँचे पर्वत

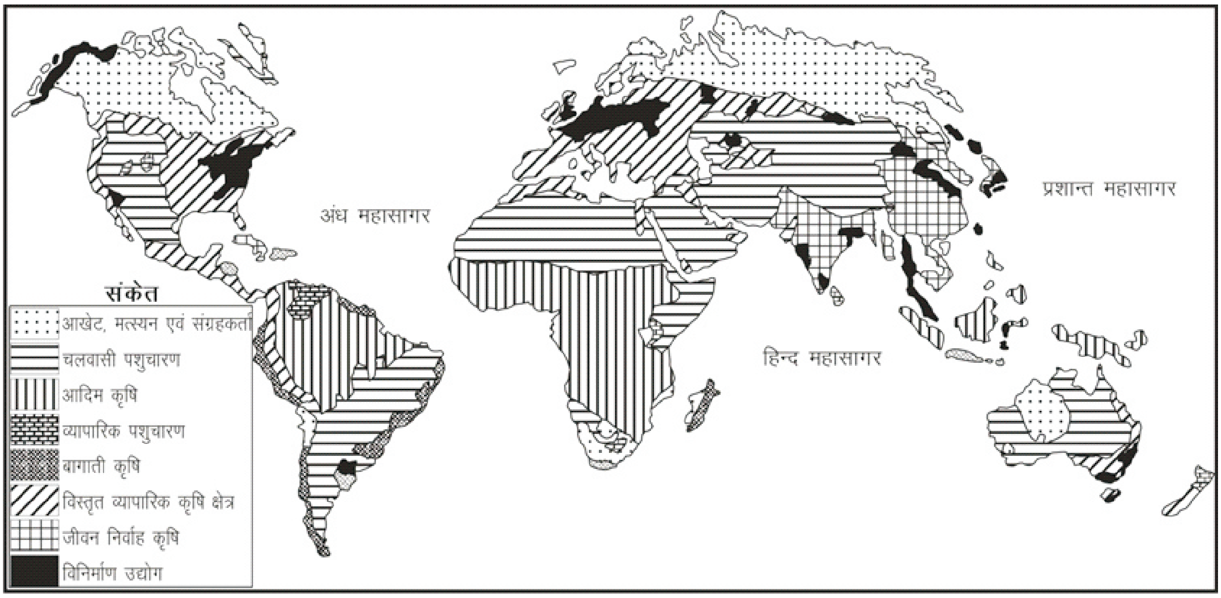

मानचित्र 7.1 : मानव के प्राथमिक व्यवसाय

इन प्रदेशों में प्राथमिक व्यवसायों को प्राकृतिक संसाधन जैसे– जलवायु, भूमि की बनावट, मिट्‌टी व वनस्पति निश्चित करते है।

सारणी 7.1 : विश्व के प्रमुख देशों में कृषिगत आय, 2015

देश	आय (बिलियन अमेरिकी डॉलर मे)
चीन	1088
भारत	413
यूरोपीयन संगठन	333
संयुक्त राज्य अमेरिका	290
इण्डोनेशिया	127
ब्राजील	110
नाइजीरिया	106

स्रोत : IMF व CIA वर्ल्ड फेक्ट बुक के अनुसार)

2. द्वितीयक व्यवसाय

द्वितीयक व्यवसाय के अन्तर्गत प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का सीधा उपयोग नहीं होता है वरन् उन्हें परिष्कृत व परिवर्तित करके उन्हें अधिक उपयोगी व मूल्यवान बनाते हैं। अर्थात "प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का सीधा उपयोग न करके, मनुष्य द्वारा परिष्कृत व परिवर्तित करके उसे उपयोगी योग्य बनाने सम्बन्धी क्रियाएँ द्वितीयक व्यवसाय कहलाते है। द्वितीयक व्यवसायों में विनिर्माण, प्रसंस्करण व निर्माण की गतिविधियाँ शामिल है। उदाहरण के लिए लौह अयस्क से इस्पात, गेहूँ से आटा, कपास से सूती वस्त्र, गन्ने से चीनी, लकड़ी से फर्नीचर व कागज बनाना आदि सभी द्वितीयक व्यवसाय के उदाहरण है। द्वितीयक व्यवसाय में निम्न व्यवसाय सम्मिलित किये जाते है।

सारणी 7.2 : विश्व के प्रमुख देशों में औद्योगिक उत्पादन आय, 2015

देश	आय (बिलियन अमेरिकन डॉलर में)
चीन	4922
संयुक्त राज्य अमेरिका	3752
जापान	1164
जर्मनी	1016
ग्रेट ब्रिटेन	588
भारत	559
दक्षिणी कोरिया	555

स्रोत : IMF व CIA वर्ल्ड फेक्ट बुक के अनुसार)

(i) उद्योग धंधे, (ii) खाद्य प्रसंस्करण, (iii) निर्माण– भवन, सड़क आदि, (iv) दुग्ध उद्योग, (v) विशेषीकृत कृषि।

द्वितीयक व्यवसायों को निर्धारित करने मे प्राकृतिक संसाधनों तथा सांस्कृतिक संसाधनों, दोनों का प्रभाव होता है। इनको निर्धारित करने वाले कारक है– (i) कच्चा माल, (ii) शक्ति के संसाधन, (iii) परिवहन व संचार की सुविधाएँ, (iv) पूँजी, (v) बाजार, (vi) सरकारी नीतियाँ, (vii) श्रम व (viii) प्रौद्योगिकीय नवाचार आदि होते है।

चित्र 7.1 : विश्व में प्रमुख व्यवसाय

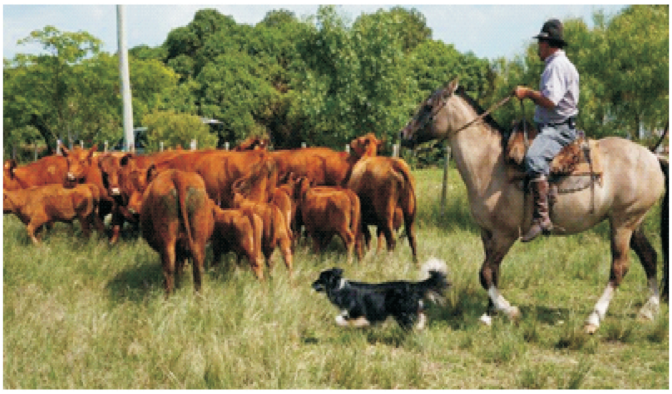

(1) प्राथमिक व्यवसाय

(2) द्वितीयक व्यवसाय

(3) तृतीयक व्यवसाय

(4) चतुर्थक व्यवसाय

3. तृतीयक व्यवसाय

इस व्यवसाय मे समुदायों को दी जाने वाली व्यक्तिगत तथा व्यवसायिक प्रत्यक्ष सेवाएँ सम्मिलित है। इसे 'सेवा श्रेणी' व्यवसाय भी कहते है। अधिकांश तृतीयक क्रिया–कलापों का निष्पादन कुशल श्रमिकों, व्यावसायिक दृष्टि से प्रशिक्षित विशेषज्ञों और परामर्श दाताओं द्वारा होता है। तृतीयक व्यवसायों में निम्न व्यवसाय सम्मिलित किये जाते है :

(1) परिवहन (2) व्यापार व वाणिज्य (3) संचार (4) सेवाएँ (बैंक, बीमा, पर्यटन इत्यादि)

इनको उस क्षेत्र के मनुष्यों के सांस्कृतिक स्तर तथा वैज्ञानिक व तकनीकी उन्नति के द्वारा निश्चित किया जाता है। एक विकसित अर्थव्यवस्था में बहुसंख्यक श्रमिक तृतीयक व्यवसायों से रोजगार पाते हैं। तृतीयक व्यवसायों में उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित होते है। उत्पादन में सेवाओं की उपलब्धता शामिल होती है जिनका उपयोग किया जाता है। सेवाओं के बदले में पारिश्रमिक लिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि तृतीयक क्रियाकलापों में मूर्त वस्तुओं के उत्पादन की बजाय सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन होता है। नलसाज, बिजली मिस्त्री, दुकानदार, डॉक्टर, वकील आदि का काम इसका उदाहरण है। विनिमय के अन्तर्गत परिवहन, व्यापार व संचार की सुविधाएँ सम्मिलित होती है। जिनका उपयोग दूरी को निष्प्रभावी करने के लिए किया जाता है।

सारणी 7.3 में तृतीयक आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 7.3 : मानव के तृतीयक व्यवसाय

तृतीयक व्यवसाय			
परिवहन	व्यापार व वाणिज्य	संचार	सेवाएँ
• सड़क • रेल • जल • वाय	• थोक • फुटकर	• दूर संचार • दृश्य श्रव्य	• बैंकिंग • बीमा • व्यक्तिगत • व्यावसायिक

सारणी 7.4 एवं आरेख 7.1 मे आर्थिक त्रि–खण्ड सिद्धान्त के आधार पर आर्थिक विकास के साथ मानव व्यवसायो मे आय बदलाव को दर्शाया गया है।

सारणी 7.4 : विभिन्न व्यवसायों में श्रमिकों का

	प्राचीन सभ्यता	संक्रमण अवधि	तृतीयक सभ्यता
प्राथमिक व्यवसाय	65	40	10
द्वितीयक व्यवसाय	20	40	20
तृतीयक व्यवसाय	15	20	70

आरेख विश्व में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न श्रमिक

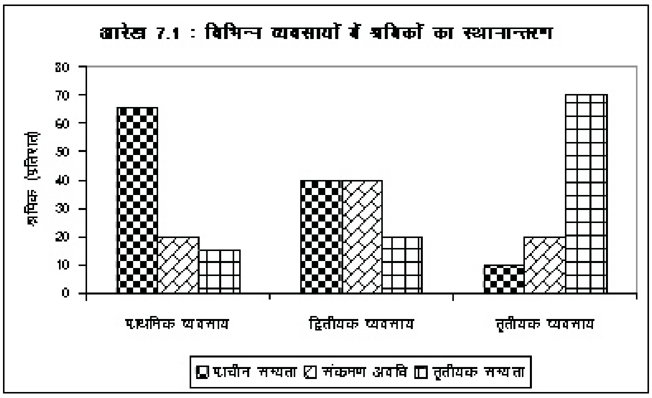

4. चतुर्थक व्यवसाय

जीन गॉटमैन अप्रत्यक्ष सेवाओं को चतुर्थक व्यवसाय की श्रेणी मे शामिल करते हैं। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आधे से ज्यादा कर्मी ज्ञान के इस क्षेत्र में कार्यरत हैं।

सूचना आधारित तथा अनुसंधान व विकास आधारित सेवाओं से इस वर्ग का सम्बन्ध है। कार्यालय भवनों, शिक्षण संस्थाओं, अस्पतालों, रंगमंचों, लेखा कार्य और दलाली की फर्मो में काम करने वाले कर्मचारी अप्रत्यक्ष वर्ग की सेवाओं से सम्बन्ध रखते हैं। चार्ट 7.1 में मानव के सेवा सेक्टर के प्रकारों का वर्गीकरण प्रस्तुत है।

चार्ट 7.1 : सेवा सेक्टर

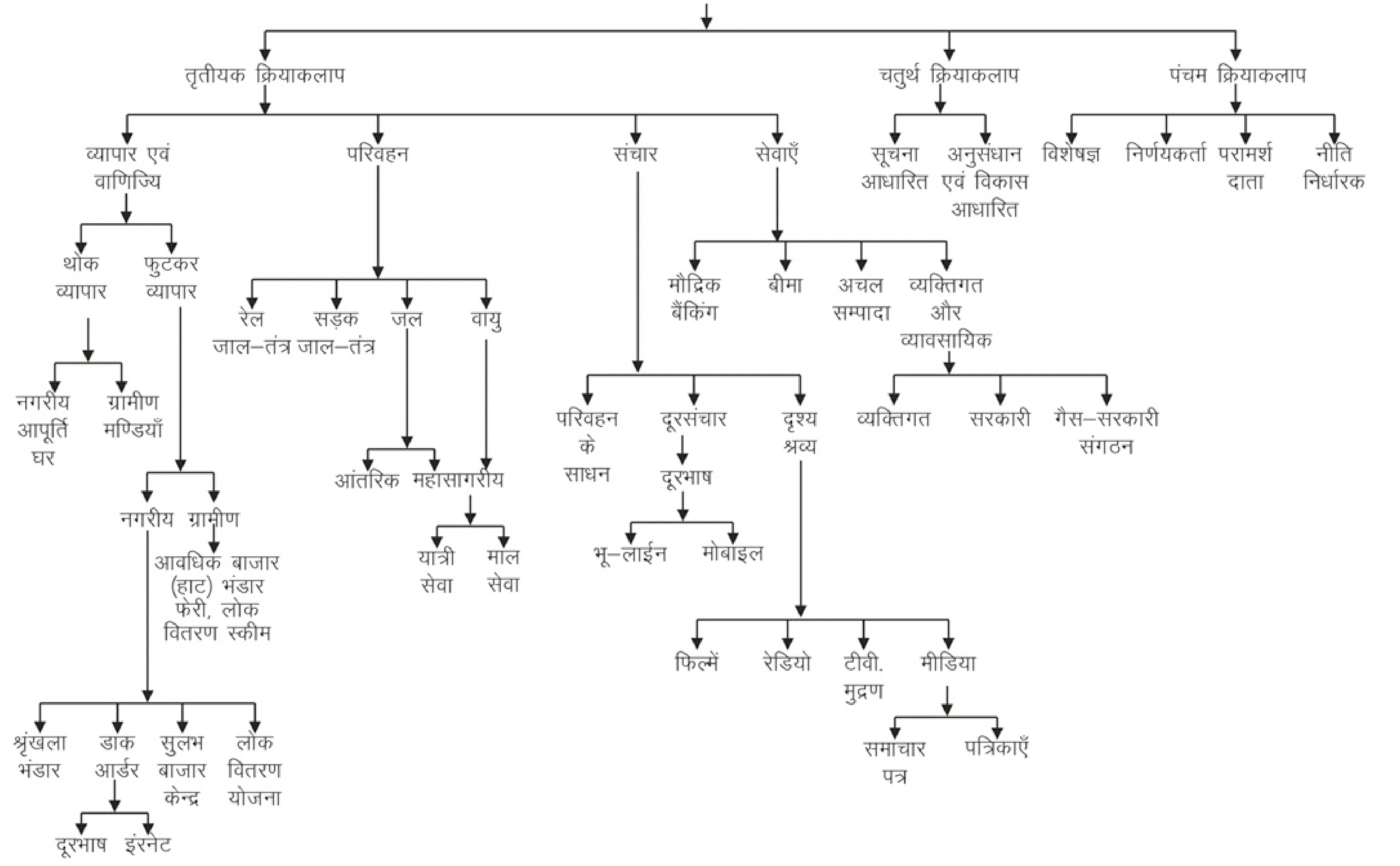

5. पंचम व्यवसाय

इसमें वे सेवाएँ आती है जो नवीन व वर्तमान विचारों की रचना व उनके पुनर्गठन की व्याख्या, आँकड़ों की व्याख्या व प्रयोग तथा नई प्रौद्योगिक के मूल्यांकन पर केन्द्रित होती है। ये व्यवसाय भी तृतीय व्यवसाय का एक और उप–विभाग है जिसमें विषय विशेषज्ञ, निर्णयकर्त्ता, परामर्शदाता व नीति निर्धारित लोगों को शामिल किया जाता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की संरचना मे इनका महत्व इनकी संख्या से कहीं अधिक होता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दू

1. मनुष्य मानव भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दू है।
2. तकनीकी विकास के साथ मनुष्य के व्यवसायों में बदलाव आता रहा है।
3. मानव व्यवसायों को पॉच मुख्य वर्गों में बॉटा गया है।
4. प्राथमिक व्यवसायों में मनुष्य प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का सीधा उपयोग कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
5. द्वितीयक व्यवसायों में प्रकृति प्रदत्त संसाधनों को परिष्कृत व परिवहन कर अधिक उपयोगी व मूल्यवान बनाया जाता है।
6. तृतीयक, चतुर्थक व पंचम व्यवसाय सेवा सेक्टर के अन्तर्गत आते हैं।
7. आर्थिक विकास के साथ ही मानव व्यवसायों में लगे श्रमिकों के व्यवसायों में तजी से बदलाव आता है।
8. विकसित देशों में चतुर्थक व पंचम प्रकार के व्यवसायों में अधिक जनसंख्या कार्यरत होती है।
9. विकासशीत देशों की अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायों व द्वितीयक व्यवसायों से जुड़ी होती है।

अभ्यसार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक

1. मानव के व्यवसाय कितने प्रकार के हैं?

   (अ) दो (ब) तीन

   (स) चार (द) पाँच

2. निम्नलिखित में से कौनसा व्यवसाय प्राथमिक व्यवसाय नहीं है?

   (अ) आखेट (ब) संग्रहण

   (स) व्यापार (द) पशुपालन

3. विनिर्माण उद्योग किस व्यवसाय से संबंधित है?

   (अ) प्राथमिक (ब) द्वितीयक

   (स) तृतीयक (द) चतुर्थक

4. प्रत्यक्ष सेवा सेक्टर किस प्रकार का व्यवसाय है?

   (अ) चतुर्थक (ब) तृतीयक

   (स) द्वितीयक (द) कोई नहीं

अतिलघूत्तरात्मक

5. प्राथमिक व्यवसाय का उदाहरण बताइए।
6. औद्योगिक क्रांति के समय लोग मुख्यतः किस व्यवसाय में संलग्न थे?
7. द्वितीयक व्यवसायों के नाम बताइये?
8. तृतीयक व्यवसायों के नाम बताइये?
9. पंचम व्यवसाय किसे कहते हैं?

लघूत्तरात्मक

10. प्राथमिक व्यवसायों का वर्णन कीजिये।
11. चतुर्थक व्यवसायों का वर्णन कीजिये।
12. द्वितीयक व्यवसायों को निर्धारित करने वाले कारकों के नाम बताइये।

निबंधात्मक

13. विश्व में किए जाने वाले प्रमुख व्यवसायों का वर्णन कीजिये।
14. मानव व्यवसायों के विकास के साथ बदलती प्रकृति को समझाइये।

आंकिक

15. अपने गांव या शहर तथा बड़े शहरों में मानव द्वारा किये जाने वाल व्यवसायों का अवलोकन कीजिए।
16. अपने गांव में प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक व्यवसाय में लगे लोगों की संख्या का पता लगाइए।

पाठ 08
प्राथमिक व्यवसाय
(Primary Occupations)

पिछले अध्याय में हमने मानव द्वारा की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं के आधार पर मुख्य व्यवसायों की जानकारी प्राप्त की। इस अध्याय में हम प्रमुख प्राथमिक व्यवसायों का अध्ययन करेंगें।

विश्व के प्राथमिक व्यवसाय निम्नलिखित हैं :–

- आखेट
- संग्रहण
- मछली पकड़ना
- पशुचारण
- कृषि
- लकड़ी काटना
- खनन

1 आखेट

यह उद्यम विश्व का सबसे प्राचीन उद्यम माना जाता है। इसमें सबसे कम व्यक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन अन्य किसी आर्थिक क्रिया की अपेक्षा अधिक क्षेत्र की आवश्यकता होती है। इस व्यवसाय में जीवनयापन न्यूनतम आधार पर संभव है। आखेट की प्रक्रिया अपनाते हुए व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर भोजन, वस्त्र एवं निवास के लिए साधन जुटाते हैं। अतिशीत व अत्यधिक गर्म प्रदेशों में रहने वाले लोग आखेट द्वारा जीवन यापन करते हैं। यह कार्य कठोर जलवायु दशाओं में घुमक्कड़ जीवन जीते हुए किया जाता है। इस कार्य के लिए बहुत कम पूँजी एवं निम्न स्तरीय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसमें भोजन अधिशेष नहीं रहता है। आखेटक लोग आखेट के लिए नुकीले औजार, विषाक्त बाणों, व फंदू आदि काम में लेते हैं। अवैध शिकार के कारण जीवों की कई जातियाँ या तो विलुप्त हो गई हैं या संकटापन्न हैं। भारत में शिकार पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया है। केवल कुछ विशिष्ट प्रदेशों के निवासी आखेट से जीवनयापन करते हैं।

चित्र 8.1 : बुशमैन द्वारा आखेट

वर्तमान में निम्न क्षेत्रों में इस प्रकार का उद्यम किया जाता है :–

(1) कनाडा के टूण्ड्रा और टैगा प्रदेशों में एस्किमों जनजाति द्वारा।

(2) उत्तरी साईबेरिया में बसने वाले सेमोयड़, तुंग, याकूत, माइत, चकची, कोरयाक आदि जनजातियों द्वारा।

(3) कालाहारी मरुस्थल में बुशमैन जनजाति द्वारा।

(4) काँगों बेसिन में पिग्मी जनजाति द्वारा।

(5) मलाया में सेंमाँग व सकाई जनजाति द्वारा।

(6) बोर्नियो में पुनान द्वारा।

(7) न्युगिनी में पापुऑन द्वारा।

(8) अमेजन बेसिन में जिवारो व यागुआ जनजाति द्वारा।

वर्तमान में इनके क्षेत्र सीमित होते जा रहे हैं। कई स्थानों पर आखेट में संलग्न जनजातियों के लोग भी स्थायी रूप से घर बनाकर रहने लगे हैं।

2. संग्रहण

खाद्य संग्रहण भी मनुष्य का सबसे पुराना व आर्थिक दृष्टि से निम्न क्रम का व्यवसाय है। सामाजिक व प्रौद्योगिक विकास के साथ इस व्यवसाय का महत्त्व कम होता जा रहा है। अब कुछ हजार लोग ही इस व्यवसाय में संलग्न हैं। मानव अपनी रोटी, कपड़ा और मकान तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का संग्रह करता आया है। इस व्यवसाय में संलग्न लोग जंगलों से फल, कंद–मूल, नट, बैरी, जड़ों, पत्तों आदि का संग्रहण करतें हैं। ये लोग कृषि नहीं करते तथा पशुओं को भी पालतू नहीं बनाते। ये पर्यावरण से छेड़छाड़ नहीं करते और न्यूनतम परिश्रम से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का सेवन करते हैं। संग्रहण व्यवसाय के मुख्य क्षेत्र निम्न हैं :–

चित्र 8.2(अ) : तेन्दू पत्ता संग्रहण

चित्र 8.2(ब) : तेन्दू पत्ता संग्रहण

(1) मलाया प्रायद्वीप में सेंमाँग व सकाई जनजाति।

(2) अमेजिन बेसिन में बोरो जनजाति।

(3) कालाहारी क्षेत्र में बुशमैन जनजाति।

(4) पर्वतीय क्षेत्रों में।

(5) दक्षिणी पूर्वी एशिया के आन्तरिक भागों में।

आधुनिक काल में भोजन संग्रहण के कार्य का कुछ भागों में व्यवसायीकरण भी हो गया है। ये लोग कीमती पौधों की पत्तियाँ, छाल एवं औषधीय पौधों को सामान्य रूप से संशोधित कर बाजार में बेचने का कार्य भी करतें हैं। विभिन्न वृक्षों की छालों का उपयोग कुनैन बनाने, चमड़ा तैयार करने व कार्क तैयार करने के लिए किया जाता है। पत्तियों का उपयोग पेय पदार्थ, दवाईयाँ, व क्रान्तिवर्धक वस्तुएँ बनाने के लिए करते हैं। रेशे को कपड़ा बनाने तथा दृढ़ फल को भोजन व तेल बनाने के लिए किया जाता है। तने का उपयोग रबर, बलाटा, गौंद, व रॉल बनाने में होता है। विश्व स्तर पर संग्रहण का महत्त्व अधिक नहीं है। इन क्रियाओं के द्वारा प्राप्त उत्पाद विश्व व्यापार में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते हैं।

3. मछली पकड़ना

यह व्यवसाय भी प्राचीन काल से ही होता आ रहा है, इसमें मानव को प्राकृतिक अवरोधों से निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है। मछलियाँ तालाबों, पोखरों, नदियों, नालों, झीलों तथा तटवर्ती सागरों से पकड़ी जाती हैं। इस व्यवसाय में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध मछलियों को पकड़तें हैं तथा अपना जीवन निर्वाह करतें हैं। मछलियों को भोजन के अलावा तेल व चमड़ा प्राप्त करने, दूधारू पशुओं को खिलाने व खाद बनाने आदि विभिन्न कामों में भी लिया जाता है।

चित्र 8.3 : मछली पकड़ने का व्यवसाय

चित्र 8.4 : केरल में मछली पकड़ने के झाल

तकनीकी विकास व बढ़ती जनसंख्या की उदरपूर्ति की माँग के कारण मत्स्य व्यवसाय में आधुनिकीकरण हुआ है। मछलियाँ ताजे पानी के स्रोतों, तथा खुले व तटवर्ती समुद्रों में पकड़ी जाती हैं। समुद्रों में शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में ठण्डी और गरम धाराओं के मिलन स्थलों पर अधिक पकड़ी जाती हैं। विश्व में मछली पकड़ने के प्रमुख क्षेत्र निम्न हैं –

(1) उत्तरी प्रशांत महासागर तटवर्तीय क्षेत्र

(2) उत्तरी अटलांटिक तटीय अमेरिकन क्षेत्र

(3) उत्तरी पश्चिमी यूरोपियन क्षेत्र

(4) जापान सागर क्षेत्र

4. पशुचारण

आखेट व संग्रहण पर निर्भर रहने वाले मानव समूह ने जब यह महसूस किया कि इनसें ढ़ग से जीवन यापन नहीं हो सकता है, तब मानव ने पशुपालन व्यवसाय को अपनाया। विभिन्न प्राकृतिक दशाओं में रहने वाले लोगों ने उन क्षेत्रों में पाये जाने वाले पशुओं का चयन करके पालतू बनाया। पशुओं से भोज्य पदार्थ, चमड़ा व ऊन प्राप्त करते हैं। यह व्यवसाय मुख्यतः उन क्षेत्रों में किया जाता है जहाँ जलवायु उष्ण व शुष्क अथवा शीतोष्ण व शुष्क होती है तथा धरातल उबड़–खाबड़ व पर्वतीय होता है। पशुपालन के मुख्य क्षेत्र हैं–

(1) उष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान : ये 5^0 से 30^0 अक्षांशों के बीच में फैले हैं, जहाँ वर्षा का औसत 100 सेमी से कम है। घास की ऊँचाई 1.8 से 3.0 मीटर के बीच होती है। इन घास के मैदानों को सूडान में सवाना, वेनेजुएला में लानोस, ब्राजील में कम्पाज तथा दक्षिणी अफ्रीका में पार्कलैंड के नाम से जाना जाता है।

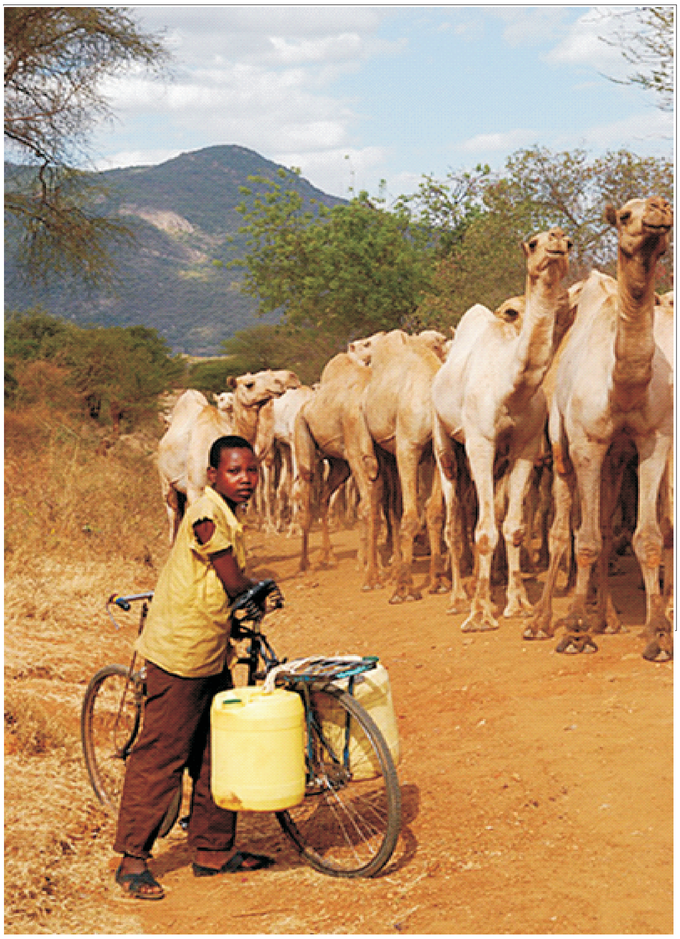

चित्र 8.5 : सूडान में ऊँट पालन

चित्र 8.6 : भारत में पशुचारण

(2) शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान– ये 30^0 से 45^0 अक्षांशों के बीच फैले हैं। यहाँ वर्षा का औसत 50 सेमी है। इन घास के मैदानों को रूस में स्टेपीज, संयुक्त राज्य अमेरिका में पम्पाज, आस्ट्रेलिया में डाउन्स के नाम से जाना जाता है।

(3) मरूस्थलीय क्षेत्र : थार मरूस्थल, कालाहारी, अरब मरूस्थल।

(4) पर्वतीय क्षेत्र : विश्व के सभी पर्वतीय स्थल।

यह व्यवसाय आदिम ढंग का भी हो सकता है और अति विकसित एवं वैज्ञानिक ढंग से व्यापारिक स्तर पर भी हो सकता है।

(अ) चलवासी पशुचारण

(1) चलवासी पशुचारण मुख्यतः जीवन–निर्वाह क्रिया है।

(2) यह पशुपालन का साधारण रूप जिसमें पशु मुख्यतः प्राकृतिक वनस्पति पर ही आश्रित होते हैं।

(3) चलवासी पशुचारण में भूमि का विस्तृत उपयोग किया जाता है।

(4) इनकी सम्पत्ति इनके पशु होते हैं।

चित्र 8.7 : पश्चिमी राजस्थान में बकरी पालन

चित्र 8.8 : चलवासी पशुचारण

(5) अधिकांश चलवासी चरवाहे कबीलों में रहते हैं।

(6) पशुचारण की विधि प्राचीन ढंग की होती है।

(7) ये लोग चारे की प्राप्ति के लिए ऋतुओं के अनुसार पशुचारण करते हैं।

(8) दक्षिणी–पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीका के सहारा मरुस्थल में ऊँट, अरब प्रायद्वीप, इराक, ईरान, अफगानिस्तान आदि देशों में भेड़, बकरी, गाय, घोड़े, गधे व खच्चर, मध्य एशिया के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में याक् व टूण्ड्रा प्रदेशों में रेण्डियर व कैरिबू पाले जाते हैं।

(9) भारत में हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में गुज्जर, बकरवाल, गद्दी व भूटिया लोगों का समूह ग्रीष्मकाल में मैदानी क्षेत्रों से पर्वतीय क्षेत्रों में चले जाते हैं तथा शीतकाल में पर्वतीय क्षेत्रों से मैदानी क्षेत्रों में आ जाते हैं।

(10) चलवासी पशुचारकों की संख्या व क्षेत्र निरन्तर घट रही है। इसके दो कारण है (i) राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण, (ii) कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाना।

(11) पिछली एक सदी के दौरान उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया में चलवासी पशुचारण का स्थान व्यापारिक पशुचारण ने ले लिया है। दक्षिणी रूस के स्टेपीज में चलवासी पशुचारण के स्थान पर स्थायी कृषि होने लगी है। रूसी गणराज्य में सिंचाई की व्यवस्था कर कपास की खेती की जा रही है।

(ब) वाणिज्यक पशुचारण

ज्ञान व विज्ञान की प्रगति तथा मानव की आवश्यकताओं में हुई वृद्धि ने पशुपालन व्यवसाय के रूप में भारी परिवर्तन कर दिया है। आज अनेक नये–नये व बड़े–बड़े क्षेत्रों में पशुपालन व्यापारिक स्तर पर व्यवस्थित ढंग से किया जाता है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैः–

(1) यह अधिक व्यवस्थित तथा पूँजी प्रधान व्यवसाय है।

(2) पशुओं के लिए बड़े–बड़े फार्म बनाये जाते हैं, जिन्हें 'रेंच' कहतें हैं।

(3) पशु उत्पादों को वैज्ञानिक ढंग से संशोधित एवं डिब्बा बन्द कर विश्व बाजार में निर्यात कर दिया जाता है।

(4) इन उत्पादों को सड़ने से बचाने के लिए रेफ्रिजरेटर का प्रयोग किया जाता है।

(5) इसमें मुख्य ध्यान पशुओं के प्रजनन, जननिक सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण व उनके स्वास्थ्य पर रहता है।

(6) व्यापारिक पशुपालन मुख्यतः शीतोष्ण घास के मैदानों में किया जाता है।

चित्र

स्रोत : IMF व CIA वर्ल्ड फेक्ट बुक के अनुसार)

चित्र 8.10 : न्यूजीलैण्ड में व्यापारिक पशुचारण

(7) डेनमार्क व न्यूजीलैण्ड दूध के लिए, आस्ट्रेलिया दूध व ऊन के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका माँस व दूध उत्पादन के लिए विशेष पहचान रखते हैं।

(8) विश्व में न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, अर्जेन्टाइना, युरुग्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका, डेनमार्क, स्वीडन तथा हालैण्ड में वाणिज्यक पशुपालन किया जाता है।

सारणी 8.1 : चलवासी पशुचारण व व्यापारिक पशुचारण में अंतर

चलवासी पशुचारण	व्यापारिक पशुचारण
1 ये चारे व पानी की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हैं।	1 इस प्रकार का पशुपालन एक निश्चित् स्थान पर बाड़ों में किया जाता है।
2 पशु प्राकृतिक रूप से पाले जाते हैं। और उनकी विशेष देखभाल नहीं की जाती है।	2 पशुओं को वैज्ञानिक रीति से पाला जाता है और उनकी विशेष देखभाल की जाती है।
3 चलवासी पशुपालक जीवन निर्वाह की एक आर्थिक क्रिया ही है।	3 यह व्यापार पर आधारित आर्थिक क्रिया है।
4 यह पुरानी दुनिया तक सीमित है।	4 यह मुख्यतःनई दुनिया के देशों में प्रचलित है।

5. कृषि

प्राथमिक स्तर की आर्थिक क्रियाओं में कृषि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह सबसे अधिक प्रचलित व्यवसाय है। कृषि ने मनुष्य को स्थायी आवास की सुविधा दी। विश्व के भोजन के मुख्य स्रोत कृषि द्वारा भोजन की लगभग 71 प्रतिशत आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। विकासशील देशों में कृषि प्रमुख व्यवसाय है। कृषि का मशीनीकरण हो जाने से उत्पादन में वृद्धि हुयी और कृषि उत्पादों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार शुरु हो गया। कृषि का बदलता स्वरूप व विकास मानव सभ्यता के विकास का प्रतीक है। विश्व में पाई जाने वाली विभिन्न भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाएँ कृषि कार्य को प्रभावित करती हैं। इस प्रभाव के कारण संसार में विभिन्न कृषि प्रणालियाँ देखी जाती हैं। कृषि की मुख्य प्रणालियाँ निम्न हैं :

(1) स्थानान्तरित कृषि

यह कृषि का सबसे प्राचीन रूप है। यह कृषि उष्ण कटिबन्धीय वनों में की जाती है। यहाँ वनों को जला दिया जाता है। भूमि को साफ किया जाता है और उस भूमि पर कृषि की जाती है। यह कृषि आदिम जनजाति के लोगों द्वारा की जाती है। इस प्रकार की कृषि की विशेषताएँ हैं:–

(i) इसमें बोये गये खेतों का आकार बहुत ही छोटा होता है।

(ii) कृषि पुराने औजारों जैसे लकड़ी, कुदाली, फावड़े आदि से की जाती है।

(iii) दो–तीन वर्षों में भूमि में उर्वरता समाप्त होने पर अन्यत्र नये सिरे से खेत तैयार कर खेती की जाती है।

(iv) इस प्रकार की कृषि को भारत के पूर्वी राज्यों में झूमिंग, मध्य अमेरिका एवं मैक्सिको में मिल्पा, मलेशिया व इण्डोनेशिया में लदांग तथा वियतनाम में 'रे' कहा जाता है।

(v) यह कृषि अमेजन नदी बेसिन, काँगो बेसिन, व पूर्वी द्वीप समूह में की भी जाती है।

(vi) वर्तमान में इसमें धान, स्थानीय मोटे अनाज मक्का, ज्वार, बाजरा, दालें, तिलहन आदि फसलें पैदा की जाती हैं।

(2) आदिम स्थायी कृषि

धीरे–धीरे स्थानान्तरणशील कृषि ने स्थायी रुप ग्रहण कर लिया तो ऐसी कृषि आदिम स्थायी कृषि कहलायी। इस कृषि की मुख्य विशेषताएँ है–

(i) भूमि को साफ करके मिट्टी की जुताई ढंग से की जाती है।